RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-11 अंक: 05 ता. 27 जून 2022, सोमवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

पुरी के लिए चलेंगी 250 विशेष ट्रेन; रथ यात्रा के कारण 12 जुलाई तक स्कूल-कॉलेज बंद

नई दिल्ली। ओडिशा में प्रसिद्ध जगन्नाथपुरी रथ यात्रा की तैयारी अब अंतिम चरण पर है। भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के रथ को अंतिम रूप दिया जा रहा है। दो साल बाद कोरोना मुक्त माहौल में रथ यात्रा निकलेगी। श्री जगन्नाथ मंदिर मैनेजिंग कमेटी को अनुमान है कि इस बार यात्रा के दिन साल 2019 से भी दोगुने भक्त पहुंचेंगे। तब 10 लाख से अधिक भक्त आए थे। कमेटी के अनुसार, इस साल भगवान के बीमार होने यानी 14 जून से उनके घर वापसी 12 जुलाई तक एक करोड़ से अधिक भक्त पुरी आएंगे। मंदिर प्रबंध समिति के सदस्य और पूजा पंडा के सेक्रेटरी माधव चंद्र पूजापंडा बताते हैं कि अभी भगवान के दर्शन नहीं हो रहे हैं। 29 जून को उनका पट खुलेगा। पहंडी दर्शन के लिए इस बार 5000 की जगह 7000 भक्तों को मौका मिलेगा। 100 रुपए की टिकट लेकर भक्त भगवान के दर्शन करेंगे। अपने विशेष हेयरस्टाइल के बारे में बताते हैं कि भगवान जगन्नाथ की पूजा नारी रूप में ही की जाती है। जगत नारी पुरुष जगदीश्वरज अर्थात सिर्फ जगन्नाथ पुरुष हैं और बाकी सभी नारी। इस वजह से पूजा के दौरान विशेष हेयरस्टाइल के साथ कपड़े भी स्त्री की तरह रखने होते हैं। भगवान की 119 प्रकार की सेवा की जाती है। हर सेवा के लिए अलग-अलग वर्ग है। एक वर्ग का व्यक्ति दूसरे वर्ग की सेवा नहीं कर सकता।

अभी पट बंद, पर रोज आ रहे 40 हजार से ज्यादा भक्त

श्री जगन्नाथ मंदिर ट्रस्ट की ओर से पूरे म्यूनिसिपल एरिया का कराया गया बीमा, रथ यात्रा के दौरान किसी हादसे में मौत होने पर 5 लाख का मुआवजा

1 जुलाई को निकलेगी रथ यात्रा, 12 जुलाई को वापस मंदिर में प्रवेश करेंगे भगवान

अभी भगवान आराम कर रहे, फिर भी रोज 40 हजार से अधिक भक्त पहुंच रहे मंदिर

पीएम मोदी ने 1975 में लगाई गई इमरजेंसी का जिक्र किया, बोले- लोगों से जीने का अधिकार छीना गया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम के जरिए देश को संबोधित कर रहे हैं। यह इस रेडियो प्रोग्राम का 90वां एडिशन है। पीएम ने एपिसोड की शुरुआत में लोगों को धन्यवाद कहकर की। इसका बाद उन्होंने इमरजेंसी का जिक्र किया और कहा कि उस दौरान देश के नागरिकों से सारे अधिकार छीन लिए गए थे, उसमें जीने का अधिकार भी शामिल है।

उन्होंने कहा, 'मन की बात के लिए मुझे आप सभी के बहुत सारे पत्र मिले हैं, सोशल मीडिया और नमो ऐप पर भी बहुत से सन्देश मिले हैं, मैं इसके लिए आपका बहुत आभारी हूं। इस कार्यक्रम में हम सभी की कोशिश रहती है कि एक दूसरे के प्रेरणादायी प्रयासों की चर्चा करें, जन-आंदोलन से परिवर्तन की गाथा, पूरे देश को बताएं।

पीएम ने कहा, 'इसी कड़ी में, मैं आज आपसे, देश के एक ऐसे जन-आंदोलन की चर्चा करना चाहता हूं जिसका देश के हर नागरिक के जीवन में बहुत महत्व है। लेकिन, उससे पहले मैं आज की पीढ़ी के नौजवानों से, 24-25 साल के युवाओं से, एक सवाल पूछना चाहता हूं और

सवाल बहुत गंभीर है, और मेरे सवाल पर जरूर सोचिए

आपातकाल के दौरान लोगों से सारे अधिकार छीने-पीएम ने कहा कि क्या आपको पता है कि आपके माता-पिता जब आपकी उम्र के थे तो एक बार उनसे जीवन का भी अधिकार छीन लिया गया था! आप सोच रहे होंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है? ये तो असंभव है। लेकिन मेरे नौजवान साथियों, हमारे देश में एक बार ऐसा हुआ था। यह 1975 की बात है। जून का वही समय था जब इमरजेंसी लगाई गई थी, आपातकाल लागू किया गया था। उस दौरान देश के नागरिकों से सारे अधिकार छीन लिए गए थे। उसमें से एक अधिकार, संविधान के आर्टिकल 21 के तहत सभी भारतीयों को मिला 'Right to Life and Personal Liberty' भी था।

गायक किशोर कुमार ने सरकार की वाह-वाही करने से मना किया तो उन पर बैन लगा दिया

पीएम ने कहा कि उस समय भारत के लोकतंत्र को कुचल देने का प्रयास किया गया था। देश की अदालतें, हर संवैधानिक संस्था, प्रेस, सब पर नियंत्रण लगा दिया गया था। सेंसरशिप की ये हालत थी कि बिना स्वीकृति कुछ भी छापा नहीं जा सकता था। मुझे याद है, तब मशहूर गायक किशोर कुमार जी ने सरकार की वाह-वाही करने से इनकार किया तो उन पर बैन लगा दिया गया 7 रेडियो पर से उनकी एंट्री ही हटा दी गई।

भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से ही इमरजेंसी को हटाकर, वापस, लोकतंत्र की स्थापना की

पीएम न कहा कि बहुत कोशिशों, हजारों गिरफ्तारियों, और लाखों लोगों पर अत्याचार के बाद भी, भारत के लोगों का, लोकतंत्र से विश्वास डिगा नहीं, रत्ती भर नहीं डिगा। भारत के हम लोगों में, सदियों से, जो लोकतंत्र के संस्कार चले आ रहे हैं, जो लोकतांत्रिक भावना हमारी रग-रग में है आखिरकार जीत उसी की हुई। भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से ही इमरजेंसी को हटाकर, वापस, लोकतंत्र की स्थापना की।

तानाशाही की मानसिकता को, तानाशाही वृति-प्रवृत्ति को लोकतांत्रिक तरीके से पराजित करने का ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में मिलना मुश्किल है। इमरजेंसी के दौरान देशवासियों के संघर्ष का, गवाह रहने का, साझेदार रहने का, सौभाग्य, मुझे भी मिला था- लोकतंत्र के एक सैनिक के रूप में।

हमें आपातकाल के उस भयावह दौर को न भूलें

पीएम ने कहा कि आज, जब देश अपनी आजादी के 75 वर्ष का पर्व मना रहा है, अमृत महोत्सव मना रहा है। हमें आपातकाल के उस भयावह दौर को भी कभी भी भूलना नहीं चाहिए। आने वाली पीढ़ियों को भी भूलना नहीं चाहिए। अमृत महोत्सव सैकड़ों वर्षों की गुलामी से मुक्ति की विजय गाथा ही नहीं, बल्कि, आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा भी समेटे हुए है। इतिहास के हर अहम पड़ाव से सीखते हुए ही, हम, आगे बढ़ते हैं।

पाक जेल में मारे गए सरबजीत सिंह की बहन दलबीर कौर का निधन

लाहौर जेल में बंद भाई को भारत लाने के लड़ी थी लड़ाई

नई दिल्ली। जासूसी के आरोप में पाकिस्तान की जेल में मारे गए सरबजीत सिंह की बहन दलबीर कौर का शनिवार देर रात निधन हो गया। बताया जा रहा है कि 60 साल की दलबीर कौर का निधन कार्डियक अरेस्ट से हुआ। दलबीर कौर ने ही अपने भाई सरबजीत सिंह को पाकिस्तान से भारत वापस लाने के लिए मुहिम छेड़ी थी और दिन-रात एक कर दिए थे। दलबीर कौर अपने भाई सरबजीत सिंह से मिलने पाकिस्तान भी गई थीं। जानकारी के मुताबिक, दलबीर कौर का अंतिम संस्कार रविवार पंजाब के भिखीविंड़ में किया जाएगा।

लाहौर जेल में हुई थी सरबजीत की मौत

सरबजीत को पाकिस्तान की एक अदालत ने आतंकवाद एवं जासूसी के लिए दोषी ठहराया था और 1991 में मौत की सजा सुनाई थी। हालांकि सरकार ने 2008 में सरबजीत को फांसी देने पर अनिश्चितकाल के लिए रोक लगा दी थी, इसके बाद अप्रैल 2013 में लाहौर में कैदियों के हमले के बाद सरबजीत की मौत हो गई थी। सरबजीत सिंह की बहन दलबीर कौर दिसंबर 2016 में भाजपा में

शामिल हुई थीं। बता दें कि सरबजीत सिंह के जीवन पर बॉलीवुड में एक फिल्म बनी थी। इस फिल्म में सरबजीत सिंह का किरदार रणदीप हुड्डा ने निभाया था जबकि उनकी बहन दलबीर कौर का किरदार एश्वर्या राय ने प्ले किया था।

दिल्ली में जल्द आने वाला है मानसून, इन राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिम मानसून आज यानी 26 जून से एक बार फिर सक्रिय होगा और गुजरात, मध्य प्रदेश और बिहार के बचे हुए हिस्सों को कवर करने के साथ ही उत्तर पश्चिम भारत में पहुंचेगा। मौसम विभाग के मुताबिक, 30 जून से 6 जुलाई तक मानसून देश के सभी हिस्सों को कवर कर सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक राष्ट्रीय राजधानी में 27 जून को आंधी के साथ बूंदाबांदी जबकि 28 जून से लगातार 4 दिन झमाझम बारिश होने की संभावना है। इस दौरान न्यूनतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस जबकि अधिकतम तापमान 35 डिग्री के करीब रहने का अनुमान है। एक जुलाई को दिल्ली का न्यूनतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक, 6 जुलाई तक मानसून पूरे देश को कवर कर लेगा। यूपी को कवर करने के साथ ही मानसून का अगला पड़ाव दिल्ली है। 27 से 30 जून के बीच मानसून राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली पहुंच सकता है।

इन राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

- अगले 5 दिन के दौरान तटीय कर्नाटक,

कोंकण गोवा, केरल, माहे और लक्ष्य द्वीप में गरज के साथ भारी बारिश की संभावना है।आंतरिक कर्नाटक, मध्य महाराष्ट्र और मराठवाड़ में ठीक-ठाक बारिश तथा गुजरात, तेलंगाना, आंध्रा प्रदेश, यमन और तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल में छिटपुट बारिश का अनुमान है।

- अगले पांच दिन के दौरान बिहार, झारखंड,गंगा नदी से सटे पश्चिम बंगाल के इलाकों में गरज-चमक के साथ भारी बारिश की संभावना है। 26,28 और 29 जून को ओडिशा, 26-29 जून के दौरान विहार के उपर और 28-29 को झारखंड में कुछ स्थानों पर भारी बारिश की चेतावनी है।

- 26 से 29 जून के दौरान उत्तराखंड, पूर्वी यूपी तथा 28 और 29 जून को हिमाचल प्रदेश और पश्चिम उत्तर प्रदेश में छिटपुट गरज के साथ बारिश की संभावना है।

यूपी के 26 जिलों में येलो अलर्ट, लखनऊ सहित कई जिलों में होगी मूसलाधार बारिश

मौसम विभाग के मुताबिक जल्द ही उत्तर प्रदेश में मौसम बदलने वाला है। कड़कती धूप और गरमी से राहत मिलने वाली है। मौसम विभाग का अपडेट है कि, 26 जून को मानसून लखनऊ समेत कई जिलों में दस्तक दे देगा। इसके साथ ही मौसम विभाग का अलर्ट है कि, राजधानी लखनऊ समेत कई जिलों में मूसलधार बारिश होगी।

कैप्टन अमरिंदर सिंह लंदन में रीढ़ की हड्डी की सफल सर्जरी

पीएम मोदी ने पूछा हाल-चाल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह को फोन कर उनकी सेहत के बारे में जानकारी ली। आधिकारिक सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। पीएम मोदी ने फोन पर कैप्टन अमरिंदर सिंह हाल-चाल जाना। अमरिंदर की शनिवार को लंदन के एक अस्पताल में रीढ़ की हड्डी की सफल सर्जरी हुई थी। वह सर्जरी के लिए हाल में लंदन पहुंचे थे। अमरिंदर पंजाब लोक

कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष हैं, जिसने भाजपा के साथ गठबंधन में पंजाब का हालिया विधानसभा चुनाव लड़ा था।

उद्धव ठाकरे की पत्नी बागियों की बीवियों को मना रहीं, CM भी कर रहे मेसेज

मुंबई। जैसे-जैसे महाराष्ट्र में राजनीतिक संकट बढ़ता जा रहा है, मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की पत्नी रश्मि ठाकरे अन्य विधायकों की पत्नियों से संपर्क कर उन्हें अपने पतियों से बात करने के लिए मना रही हैं। सूत्रों के मुताबिक, उद्धव ठाकरे कुछ बागी विधायकों को भी मैसेज कर रहे हैं जो इस समय गुवाहाटी के एक होटल में ठहरे हुए हैं। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने शिवसेना नेताओं के साथ एक राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता की, प्रस्तावों को पारित किया और चुनाव आयोग (ईसी) को किसी अन्य राजनीतिक संगठन या गुट को शिवसेना और इसके संस्थापक दिवंगत बालासाहेब ठाकरे के नाम का उपयोग करने से रोकने की अपील की। मौजूदा राजनीतिक संकट की शुरुआत

एकनाथ शिंदे ने की थी, जो कई विधायकों के साथ एमएलसी चुनाव परिणाम के बाद शिवसेना सुप्रीमो के संपर्क से दूर हो गए थे। वे फिलहाल गुवाहाटी के एक होटल में डेरा डाले हुए हैं। तब से निर्दलीय समेत कई विधायक बागी खेमे में शामिल हो चुके हैं।

शिंदे गुट ने शिवसेना बालासाहेब बनाई

आपको बता दें कि शिवसेना के असंतुष्ट विधायक दीपक केसरकर ने शनिवार को कहा कि विधायक दल में बागी गुट के पास दो तिहाई बहुमत है। उन्होंने महाराष्ट्र के वरिष्ठ मंत्री एकनाथ शिंदे को अपना नेता चुना है। हमने अपने समूह का नाम शिवसेना (बालासाहेब) रखने का फैसला किया है क्योंकि हम उनकी विचारधारा में विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि हमने शिवसेना नहीं छोड़ी है। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे शिवसेना की कार्यकारिणी की बैठक कर रहे थे।

...तो गिर जाएगी ठाकरे की सरकार

महाराष्ट्र विधानसभा की कुल ताकत 287 है और विश्वास मत की स्थिति में बहुमत 144 है। शिवसेना, राकांपा और कांग्रेस के सत्तारूढ़ गठबंधन के पास 169 सीटें हैं। यदि शिंदे के नेतृत्व वाले विधायक इस्तीफा देते हैं, तो महा विकास अघाड़ी (एमवीए) की ताकत बहुमत के निशान से नीचे आ जाएगी, जिससे उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली सरकार गिर जाएगी।

भाजपा के मास्टर स्ट्रोक से बदलेंगे राजस्थान के सियासी समीकरण, 40 सीटों पर आदिवासी निर्णायक भूमिका में;

जयपुर। एनडीए के राष्ट्रपति उम्मीदवार दौपद्री मुर्मू से राजस्थान में सियासी समीकरण गड़बड़ा गए है। भाजपा सियासी मुद्दा बनाकर कांग्रेस के परंपरागत वोट बैंक में सेंध लगाने की तैयारी कर रही है। राजस्थान की राजनीति में परंपरागत तौर पर आदिवासी कांग्रेस का वोट बैंक माना जाता है, लेकिन इस बार भाजप ने बड़ा सियासी खेलते हुए आदिवासी महिला को राष्ट्रपति का उम्मीदवार बना दिया। कांग्रेस ने हाल में आदिवासियों के महाकुंभ बैणेश्वर धाम में राहुल गांधी की जनसभा कर आदिवासियों का साधने का प्रयास किया था।

25 सीटें एसटी के लिए रिजर्व

राजस्थान में 200 विधानसभा सीटों में से 25 विधानसभा सीटें ऐसी हैं जो एसटी वर्ग के लिए आरक्षित हैं। वहीं 6 गैर आरक्षित सीटों पर भी एसटी वर्ग के विधायकों ने जीत दर्ज की थी। इनमें से अकेले आदिवासी बहुल वांगड़ अंचल के चार जिलों डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर और प्रतापगढ़ जिले की 16 सीटें एसटी वर्ग के लिए रिजर्व हैं जबकि जयपुर जिले की दो , करौली की दो, दौसा की एक, अलवर जिले की एक, सिरोही की एक, बारां की एक और सवाई माधोपुर जिले की 1 सीट भी आरक्षित वर्ग के लिए रिजर्व है। राजस्थान की कुल 200 विधानसभा सीटों में से 40 पर आदिवासी हार-जीत का फैसला करते रहे हैं।

40 सीटों पर आदिवासी तय करते हैं हार-जीत-राजस्थान में तकरीबन 40 सीटें ऐसी हैं जहां पर आदिवासी मतदाता निर्णायक भूमिका में हैं। राजस्थान में अधिकांशतः आदिवासियों को कांग्रेस का परंपरागत वोट बैंक माना जाता है, ऐसे में संभावना यही है कि

क्या देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति के जरिए बीजेपी कांग्रेस के परंपरागत वोट बैंक में सेंध लगा पाएगी। राष्ट्रपति के चुनाव में एनडीए की आदिवासी उम्मीदवार को लेकर कांग्रेस के आदिवासी विधायक असमंजस की स्थिति में हैं। कांग्रेस विधायकों के सामने परेशानी यह है कि वह आदिवासी कैडिडेट का समर्थन करें या फिर पार्टी व्हिप का, हालांकि अभी तक कांग्रेस के विधायक पार्टी व्हिप की पालना की ही बात कर रहे हैं।

कांग्रेस-बीजेपी का फोकस आदिवासियों पर-राजस्थान विधानसभा चुनाव 2023 से पहले कांग्रेस और भाजपा आदिवासी वोटर्स को लुभाने की कोशिश कर रही है। कांग्रेस ने राहुला गांधी की रैली करवाई। जबकि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा पूर्वी राजस्थान में एसटी सम्मेलन कर चुके हैं। दोनों ही दल आदिवासियों को वोट बैंक की अहमियत जानते हैं। आदिवासियों के तीर्थस्थल बैणेश्वर धाम में राहुल गांधी की जनसभा का आयोजन आदिवासी वोटबैंक पर कड़ी नजर को दिखाता है। वहीं दूसरी और सियासी मैदान में उभरी नई भारतीय ट्राइबल पार्टी यानी बीटीपी कांग्रेस और बीजेपी के लिए परेशानी का सबब बन गई है। आलम यह है कि बीटीपी के बढ़ते प्रभाव से चिंतित सीएम अशोक गहलोत ने कई आदिवासियों के लिए कई योजनाएं शुरू की। विधानसभा चुनाव 2018 में धौलपुर, करौली, भरतपुर, सवाई माधोपुर, अलवर और दौसा जिले की 35 विधानसभा सीटों में बीजेपी को 3 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। जबकि कांग्रेस के खाते में 27 सीट आई थी।

मैनपुरी में मिले 4 हजार साल पुराने हथियार, एएसआई का दावा भगवान कृष्ण के काल के हैं यह वेपन

आगरा(उप्र)। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में तांबे के मानवरूपी आंकड़े और तलवार और हापून जैसे हथियार मिलने का दावा किया है, जो संभवत- 3,800 साल पुराने हैं। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में 1600-2000 ईसा पूर्व के तांबे के हथियार और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े पाए गए हैं। कॉपर होड्र्स दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की पहली छमाही में पाए जाने वाले पुरावशेष हैं। 19वीं शताब्दी की शुरुआत से, इन प्राचीन वस्तुओं की खोज उस क्षेत्र में की गई है जहाँ यमुना और गंगा नदियाँ मिलती हैं। एएसआई के संरक्षण निदेशक और प्रवक्ता वसंत स्वर्णकार ने दिप्रिंट को बताया कि खोज से पता चलता है कि क्षेत्र के निवासी लड़ाई में लगे हुए थे, जैसे कि बागपत के सनौली में 2018 के निष्कर्ष, हालांकि वह एक दफन स्थल था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। एएसआई के आगरा परिमंडल के अधीक्षण पुरातत्वविद् राजकुमार पटेल ने बताया कि कुरावली तहसील के गणेशपुरा गांव में मिली वस्तुएं ताम्रपाषाण काल ??या ताम्र युग की हैं। उन्होंने बताया कि एक किसान को 10 जून को गेरूए रंग के मिट्टी के बर्तन, मानव सदृश्य आकृतियां और तांबे के हथियार एक खेत में मिले थे। अधिकारी ने कहा, शुरुआत में, उसने इन चीजों को यह सोचकर छिपाने की कोशिश की कि उसे कुछ कीमती वस्तुएं मिली हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने बाद में उसके पास से ये वस्तुएं बरामद कर लीं। पटेल ने कहा, हम गांव में करीब आठ दिन रहे और जिस खेत से वस्तुएं मिलीं, वहां की वैज्ञानिक जांच की। उन्होंने कहा, यह पाया गया कि जो हथियार और अन्य वस्तुएं मिली हैं, वे 3800-4000 साल पुरानी हैं और ताम्रपाषाण या ताम्र युग की हैं। हथियार शुद्ध तांबे से बने हुए हैं। पटेल ने कहा कि हथियारों में एक मीटर तक की तलवारें और कई प्रकार की बर्छी शामिल हैं तथा एक बर्छी चारधारी है। उन्होंने कहा कि हथियारों के आकार को देखते हुए ऐसा लगता है कि इनका इस्तेमाल योद्धाओं या सैनिकों द्वारा किया गया होगा। उन्होंने कहा, हमें गेरूए रंग के मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े भी मिले हैं। एएसआई के प्रवक्ता वसंत कुमार स्वर्णकार ने कहा कि गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में अकसर ऐसी वस्तुएं पाई जाती हैं। उन्होंने कहा, हमारी जांच जारी है और उपयुक्त जांच के बाद ही हम निष्कर्षों पर अधिक बात कर पाएंगे।

सिद्धू मूसेवाला की हत्या के बाद तिहाड़ प्रशासन बदल रहा है गैंगस्टरों की जेलें

नई दिल्ली । पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला की हत्या पंजाब के मानसा में हुई, लेकिन जांच में खुलासा हुआ कि इसकी साजिश दिल्ली के तिहाड़ जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई ने की थी। इसके लिए बिश्नोई तिहाड़ जेल में फोन का उपयोग कर कनाडा में मौजूद गोल्डी बरार से कॉन्टेक्ट में था। अब जेल में बंद गैंगस्टर्स पर शिकंजे के लिए तिहाड़ जेल प्रशासन जेल में बंद कुख्यात गैंगस्टर्स की जेलें लगातार बदल रहा है। हाल में जिन गैंगस्टर्स की जेल बदली गईं, उनमें से ज्यादातर बिश्नोई गैंग से जुड़े ही हैं। बैंकॉक से भारत लाए गए और तिहाड़ में बंद वीरेंद्र उर्फ काला राणा, राजू बसोदी, सुनील उर्फ टिल्लू ताजपुरिया, नरेश सेठी, इरफान उर्फ छेनू, संदीप उर्फ काला जठेड़ी, नवीन बाली और मंजीत उर्फ महाल जैसे गैंगस्टर्स की जेलें बदली गई हैं। सभी गैंगस्टर्स को 24 घंटे सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में रखा जा रहा है। पुलिस के मुताबिक, ये गैंगस्टर्स जेल के अंदर रहकर भी अपना नेटवर्क धड़ल्ले से चला रहे थे। तिहाड़ जेल के डीजी संदीप गोयल ने बताया, हम लगातार कुख्यात गैंगस्टर्स को एक एक जगह से हटाकर दूसरी जेल में कर रहे हैं। हालांकि, तिहाड़ जेल प्रशासन हमेशा ऐसी सख्ती की बात करता है। बावजूद इसके जेल से गैंगस्टर्स रंगदारी और हत्या की वारदातों को अंजाम दिलवाते रहते हैं। गौरतलब है कि पंजाबी गीतकार शुभदीप सिंह सिद्धू उर्फ सिद्धू मूसेवाला की 29 मई को हत्या कर दी गई थी। सिद्धू को पंजाब में मानसा जिले के गांव मूसा के पास मारा गया था। तब उनकी गाड़ी पर बदमाशों ने करीब 30 राउंड फायरिंग की थी। हाल ही में, पंजाब पुलिस के एडीजीपी प्रमोद बान ने बताया कि गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई कबूल कर लिया है कि मूसेवाला की हत्या की साजिश का मास्टरमाइंड वही था।

कोरोना के मामलों में दर्ज की गई गिरावट, पिछले 24 घंटों में सामने आए 11,739 नए मरीज

नई दिल्ली । देश में कोरोना मामलों में बड़ी गिरावट देखने को मिली है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के रविवार को अपडेट किए गए आंकड़ों के मुताबिक भारत में 11,739 नए कोरोना मामले सामने आए हैं। उल्लेखनीय है कि बीते दिन यह आंकड़ा 15940 था। अब कुल संक्रमितों की संख्या 4,33,89,973 हो गई है। मंत्रालय के अनुसार बीते 24 घंटों में 25 लोगों ने कोरोना के चलते अपनी जान गवाई है। कोरोना केसों की रफ्तार थोड़ी थमी जरूर है, लेकिन कोरोना से ठीक होने वालों का आंकड़ा घट गया है। इसके चलते एक्टिव केस बढ़कर 92,576 हो गए हैं। वहीं 25 नए लोगों की मौत के चलते मरने वालों की संख्या बढ़कर 5,24,999 हो गई है। मंत्रालय के अनुसार एक्टिव मामलों में कुल संक्रमणों का 0.21 फीसदी शामिल है। 24 घंटे की अवधि में एक्टिव केस में 797 मामलों की वृद्धि दर्ज की गई है। रिपोर्ट के अनुसार दैनिक सकारात्मकता दर 2.59 फीसदी और साप्ताहिक सकारात्मकता दर 3.25 फीसदी दर्ज की गई। बीमारी से स्वस्थ होने वालों की संख्या बढ़कर 4,27,72,398 हो गई, जबकि मृत्यु दर 1.21 प्रतिशत दर्ज की गई। मंत्रालय के अनुसार, राष्ट्रव्यापी कोविड-19 टीकाकरण अभियान के तहत अब तक देश में कोविड वैक्सीन की 197.08 करोड़ खुराक दी जा चुकी हैं। वहीं मौत के आंकड़ों की बात करें तो बीते 24 घंटों में 25 लोगों की मौत हुई, जिसमें केरल के 10, दिल्ली के छह, महाराष्ट्र के चार, पश्चिम बंगाल के दो और हिमाचल प्रदेश, झारखंड और राजस्थान के एक-एक व्यक्ति शामिल हैं।

भारत ने 3,000 मीट्रिक टन गेहूं की नई खेप अफगानिस्तान भेजी, गेहूं भेजने का काम पूरा

नई दिल्ली। भारत ने अफगान लोगों को मानवीय सहायता के तौर पर पाकिस्तान के जमीनी मार्ग से अफगानिस्तान को 3,000 मीट्रिक टन गेहूं की नई खेप भेजी है। इस खेप के साथ ही भारत ने विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के साथ साझेदारी में अफगानिस्तान को 33,500 मीट्रिक टन गेहूं भेजने का काम पूरा कर लिया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने ट्वीट किया, भारत ने अफगानिस्तान को 3,000 मीट्रिक टन गेहूं की खेप भेज दी। अफगान लोगों को मानवीय सहायता मुहैया कराने की हमारी प्रतिबद्धता अब भी दृढ़ है। उन्होंने कहा, अभी तक भारत ने डब्ल्यूएफपी के साथ मिलकर अफगानिस्तान को 33,500 मीट्रिक टन गेहूं की खेप सफलतापूर्वक भेजी है।

27 से 30 जून के बीच दिल्ली में सक्रिय होगा मानसून, कई राज्यों में हल्की-मध्यम वर्षा का पूर्वानुमान

नई दिल्ली । दक्षिण-पश्चिम मानसून 26 जून से फिर सक्रिय होने वाला है और गुजरात, मध्य प्रदेश और बिहार के बचे हुए हिस्सों को कवर करता हुआ उत्तर पश्चिम भारत में पहुंचेगा। मौसम विभाग के मुताबिक, स्थितियां अनुकूल बनी रहीं तो 30 जून से 6 जुलाई तक मानसून पूरे देश को कवर लेगा। मौसम विभाग के मुताबिक राष्ट्रीय राजधानी में 27 जून को आंधी के साथ बूंदाबांदी, जबकि 28 जून से लगातार 4 दिन बारिश होने की संभावना है।

इस दौरान न्यूनतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस रहेगा जबकि अधिकतम तापमान 35 डिग्री के करीब रहने का अनुमान है।

एक जुलाई को दिल्ली का न्यूनतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक, 6 जुलाई तक मानसून पूरे देश को कवर कर लेगा। यूपी को कवर करने के साथ ही मानसून का अगला पड़ाव दिल्ली है। 27 से 30 जून के बीच मानसून राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली पहुंच सकता है।

अगले 5 दिन के दौरान तटीय कर्नाटक, कोंकण गोवा, केरल, माहे और लक्ष्य द्वीप में गरज के साथ भारी बारिश की संभावना है।आंतरिक कर्नाटक, मध्य महाराष्ट्र और मराठवाड़ में ठीक-ठाक बारिश तथा गुजरात, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, यमन और तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल में छिटपुट बारिश का अनुमान है। इस दौरान बिहार, झारखंड, गंगा से सटे पश्चिम बंगाल के इलाकों में गरज-चमक के साथ भारी बारिश की संभावना है। 26,28 और 29 जून को ओडिशा, 26-29 जून के दौरान विहार के उपर और 28-29 को झारखंड में कुछ स्थानों पर भारी बारिश की चेतावनी है। 26 से 29 जून के दौरान उत्तराखंड, पूर्वी यूपी तथा 28 और 29 जून को हिमाचल प्रदेश और पश्चिम उत्तर प्रदेश में छिटपुट गरज के साथ बारिश की संभावना व्यक्त की गई है।

मौसम विभाग के मुताबिक जल्द ही उत्तर प्रदेश में मौसम बदलने वाला है। कड़कती धूप और गरमी से राहत मिलने वाली है। मौसम विभाग का अपडेट है कि 26 जून को मानसून लखनऊ समेत कई जिलों में दस्तक दे देगा।

भारत किसी को एक इंच भी जमीन नहीं देगा : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली (एजेंसी)।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि भारत अपनी एक इंच भी जमीन चीन को नहीं देगा और उम्मीद जताई कि पूर्वी लद्दाख में सीमा पर जारी गतिरोध से संबंधित सभी लंबित मुद्दों का समाधान दोनों देशों के बीच बातचीत के जरिये हो जाएगा।

सिंह ने यह भी कहा कि भारत अपनी एकता, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए खतरा पैदा करने वाले किसी भी व्यक्ति को मुंहतोड़ जवाब देगा, क्योंकि भारत अब 'कमजोर' देश नहीं है। पूर्वी लद्दाख में गतिरोध पर विपक्ष द्वारा सरकार की आलोचना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा राजनीतिक विरोधी तथ्यों को पूरी तरह से जाने बिना कुछ सवाल उठाते रहते हैं।

राजनाथ सिंह ने जी न्यूज द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान कहा, ''मैं वर्ष 1962 के चीन-भारत युद्ध के दौरान क्या हुआ, इसमें नहीं जाना चाहता। लेकिन मैं देश के रक्षा मंत्री के रूप में आश्वस्त करना चाहता हूं कि जब हम सरकार में हैं, तो चीन के कब्जे में एक इंच भी जमीन नहीं जा सकती है।'' उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार किसी भी कीमत पर देश के गौरव और प्रतिष्ठा से समझौता नहीं करेगी। रक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि रूस-यूक्रेन संघर्ष ने दिखाया है कि अगर दुनिया के किसी भी हिस्से में युद्ध होता है, तो इसे शामिल देशों को लड़ना होगा और कोई तीसरा देश आसानी से शामिल नहीं होगा। पैंगोंग क्षेत्र में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हिंसक झड़प के बाद मई 2020 की शुरुआत में पूर्वी लद्दाख में सीमा गतिरोध शुरू हुआ था। कई दौर की सैन्य वार्ता के परिणामस्वरूप दोनों पक्षों ने पिछले साल पैंगोंग झील के उत्तर और दक्षिण तट तथा गोगरा क्षेत्र में सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया पूरी की, हालांकि तनाव के कुछ बिंदुओं को लेकर गतिरोध जारी है।

रक्षा मंत्री ने कहा कि दोनों पक्षों के सैनिकों के बीच तनातनी काफी हद तक वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के बारे में चीन की धारणा के कारण होती है। नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान के साथ संघर्षविराम के बारे में सिंह ने कहा कि यह एक साल से अधिक समय से लागू है।

भारत के कद का जिक्र करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा, ''इससे पहले पाकिस्तान संघर्षविराम पर राजी होने के बाद इसका उल्लंघन करता था। लेकिन फिलहाल संघर्षविराम को लागू हुए एक साल से अधिक समय हो गया है, लेकिन पाकिस्तान इसका उल्लंघन करने का साहस नहीं जुटा पाया है। यह काम कर रहा है।'' रक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि वामपंथी उग्रवाद अब अपने सबसे न्यूनतम स्तर पर है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में भी हिंसा का सिलसिला लगभग खत्म हो गया है।

अग्निपथ योजना के खिलाफ सोमवार को देशव्यापी विरोध प्रदर्शन करेगी कांग्रेस

-'अग्निपथ योजना' के खिलाफ 20 अलग-अलग जगहों पर प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे कांग्रेस नेता

नई दिल्ली । केंद्र सरकार की अग्निपथ योजना के खिलाफ देशभर में विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। कांग्रेस अग्निपथ योजना के खिलाफ सोमवार को देशव्यापी विरोध प्रदर्शन करेगी। इस बीच कांग्रेस नेता 20 अलग-अलग जगहों पर प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे। कांग्रेस ने 'अग्निपथ की बात, युवाओं से विश्वासघात' अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत कांग्रेस पार्टी पूरे देश में मीडिया से बातचीत करेगी। शिमला में आलोक शर्मा प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे। देहरादून में मानवेंद्र सिंह, चंडीगढ़ में सांसद रंजीत रंजन, नई दिल्ली में सांसद शक्तिसिंह गोहिल, जयपुर में सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा, अहमदाबाद में अलका लांबा, मुंबई में सुप्रिया श्रीनेत, बेंगलुरू में एमएम पल्लम राजू, चेन्नई में सासंद गौरव गोगोई, हैदराबाद में सांसद नसीर हुसैन प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे। पार्टी के अन्य नेता भी इस मुद्दे को लेकर इसी तरह की प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करेंगे।

असम में बाढ़ से चार और लोगों की मौत, सिलचर छठे दिन भी जलमग्न

गुवाहाटी (एजेंसी)।

असम में शनिवार को भी बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी रही तथा इस प्राकृतिक आपदा में चार और लोगों की मौत हो गयी। राज्य में 25.10 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं, जबकि कछार जिले का सिलचर शहर छठे दिन भी जलमग्न रहा।

अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि मृतकों में बारपेटा, कछार, दर्रांग और गोलाघाट जिलों के लोग शामिल हैं। इसके साथ ही असम में इस साल बाढ़ तथा भूस्खलन में जान गंवाने वाले लोगों की संख्या 122 पर पहुंच गयी है। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) द्वारा जारी बुलेटिन के अनुसार, 27 जिलों में बाढ़ प्रभावित लोगों की संख्या अब घटकर 25.10 लाख रह गयी है, जबकि शुक्रवार तक 28 जिलों में यह आंकड़ा 33.03 लाख था। अधिकारियों ने कहा कि कुछ जिलों में स्थिति में मामूली सुधार हुआ है। नदियों का जल स्तर कुछ हद तक कम हुआ है। हालांकि, धुबरी में ब्रह्मपुत्र और नगांव में कोपिली नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। उपायुक्त कीर्ति जल्ली ने कहा कि बेटकुंडी में बांध टूटने के कारण पिछले छह दिनों से जलमग्न सिलचर शहर में लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के प्रयास चल रहे हैं और प्रशासन बीमार लोगों को अस्पताल पहुंचाने को प्राथमिकता देने के साथ सिलचर में बचाव अभियान चला रहा है। उन्होंने कहा कि वायुसेना के हेलीकॉप्टर की मदद से भोजन के पैकेट, पीने के पानी की बोतलें और अन्य जरूरी चीजें शहर में वितरित की जा रही हैं तथा यह कार्य तब तक जारी रहेगा जब तक कि स्थिति में सुधार नहीं हो जाता। बाढ़ प्रभावित लोगों को राहत सामग्री उपलब्ध कराने के साथ-साथ बाढ़ की स्थिति पर नजर रखने के लिए सिलचर में दो ड्रोन भी तैनात किए गए हैं। सिलचर में ईटानगर और भुवनेश्वर से पहुंचे 207 कर्मियों के साथ राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के आठ दलों तथा 120 कर्मियों वाली एक सैन्य टुकड़ी को तैनात करने के साथ दीमापुर से लाई गईं नौ नौकाओं को भी उतारा गया है। एएसडीएमए के एक अधिकारी ने बताया कि सीआरपीएफ के 10 जवान और एसडीआरएफ के चार कर्मियों को बचाव अभियानों के लिए हवाई मार्ग से कछार लाया गया है। अधिकारियों ने कहा कि सिलचर में लगभग तीन लाख लोग भोजन, स्वच्छ पेयजल और दवाओं की भारी कमी से जूझ रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर के लिए जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करना सम्मान की बात : सिन्हा

श्रीनगर (एजेंसी)।

जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को कहा कि वर्ष 2023 में जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करना केंद्र शासित प्रदेश के लिए सम्मान की बात है। उन्होंने कहा कि प्रशासन इसे भव्य आयोजन बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। जम्मू कश्मीर के 2023 में जी-20 की बैठकों की मेजबानी करने के मद्देनजर बृहस्पतिवार को केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन ने समग्र समन्वय के लिए पांच सदस्यीय उच्च स्तरीय समिति का गठन किया।

अगस्त 2019 में संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत प्रदत्त विशेष दर्जे को वापस लेने और तत्कालीन राज्य को दो केंद्रशासित प्रदेशों में विभाजित करने के बाद जम्मू कश्मीर में आयोजित होने वाला यह पहला बड़ा अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मेलन होगा। सिन्हा ने यहां संवाददाताओं से कहा, ''यह बहुत अच्छी शुरुआत है। यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि हमें जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने का अवसर मिलेगा। हमने एक समिति बनाई है और हम इसे भव्य बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे।'' इससे पहले दिन में, उपराज्यपाल ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश में विकास शांतिपूर्ण माहौल में ही हो सकता है। उन्होंने कहा, ''अगर शांति नहीं हो तो दुनिया की कोई भी ताकत इस स्थान पर विकास नहीं कर सकती है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें ये पसंद नहीं आता। वे यहां शांति नहीं चाहते, वे हिंसा चाहते हैं।'' सिन्हा ने कहा कि अगर केंद्र शासित प्रदेश बंद और हिंसा के दौर में लौटता है ''तो उसे फिर से खौफनाक दिन देखना पड़ सकता है।'' उन्होंने कहा, ''मैं लोगों से इन तत्वों से सावधान रहने की अपील करता हूं। वे आपके मित्र नहीं हैं, वे शांति के मार्ग में रोड़ा बनना चाहते हैं। हालांकि, ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है और मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमारा प्रशासन और सुरक्षा बल आम आदमी की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।''

मोदी के खिलाफ सीतलवाड़ के अभियान में सोनिया गांधी कांग्रेस की प्रेरक शक्ति थीं : भाजपा

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

भारतीय जनता पार्टी ने सुप्रीमकोर्ट की आलोचनात्मक टिप्पणियों का हवाला देकर सामाजिक कार्यकर्ता तीस्ता सीतलवाड़ पर निशाना साधा। भाजपा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस और उसकी अध्यक्ष सोनिया गांधी 2002 के गुजरात दंगों को लेकर तत्कालीन सीएम नरेंद्र मोदी के खिलाफ सीतलवाड़ के अभियान के पीछे प्रेरक शक्ति थीं। सीतलवाड़ को गुजरात आतंकवाद विरोधी दस्ते द्वारा मुंबई से हिरासत में लेने और अहमदाबाद की अपराध शाखा में उनके खिलाफ दर्ज प्राथमिकी के सिलसिले में अहमदाबाद ले जाने के बाद भाजपा ने सीतलवाड़ पर तीखा हमला किया।

भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि शीर्ष अदालत ने दंगों के संबंध में छिपे मंसूबे के तहत मामला 'गर्माए रखने' के लिए जिम्मेदार लोगों को फटकार लगाते हुए सीतलवाड़ का नाम लिया। पात्रा ने कहा कि अदालत ने टिप्पणी की है कि प्रक्रिया के दुरुपयोग में शामिल सभी लोगों को कठघरे में खड़ा करने की जरूरत है। उच्चतम न्यायालय ने अपने आदेश में 2002 के गोधरा दंगों के मामले में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री मोदी और अन्य को विशेष जांच टीम (एसआईटी) द्वारा दी गई क्लीन चिट को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी।

आरएसएस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र हित में कार्य कर रहा : योगी आदित्यनाथ

लखनऊ (एजेंसी)।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का दृष्टिकोण और चिंतन प्रक्रिया वैज्ञानिक है और इसी आधार पर यह राष्ट्रहित में कार्य कर रहा है। विज्ञान भारती के पांचवें राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''भारतीय दृष्टि का विश्वास है कि नया ज्ञान, विज्ञान है।

इस विज्ञान भारती को आरएसएस का संरक्षण प्राप्त है। आरएसएस का यह दृष्टिकोण और चिंतन प्रक्रिया वैज्ञानिक है और इसी दृष्टिकोण के साथ यह राष्ट्र के हित में कार्य कर रहा है।'' उन्होंने कहा कि संघ के संस्थापक डॉ हेडगेवार एक चिकित्सक और वैज्ञानिक थे। उन्होंने कहा कि पूर्व आरएसएस प्रमुख गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) भी एक वैज्ञानिक थे और अन्य आरएसएस प्रमुखों का भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण था। आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय दृष्टि कहती है कि किसी भी चीज को नष्ट नहीं किया जा सकता। लेकिन यह अपना स्वरूप बदल लेती है और यह एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। विक्रम संवत कैलेंडर के उपयोग को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''हम आमतौर पर विभिन्न शुभ और धार्मिक कार्यक्रमों के लिए विक्रम संवत पर आधारित पंचांग का संदर्भ लेते हैं। अंग्रेजी कैलेंडर और विक्रम संवत पंचांग के बीच एक अंतर है। अंग्रेजी तिथियों में कोई वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं है, जबकि विक्रम संवत में वैज्ञानिकता है।'' उन्होंने कहा कि अंग्रेजी तिथियों में कोई मुहूर्त नहीं होता और अंग्रेजी के कैलेंडर में सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण की तिथियां हर साल बदलती हैं, लेकिन भारतीय पंचांग के मुताबिक चंद्र ग्रहण हमेशा पूर्णिमा को होता है और सूर्य ग्रहण अमावस्या को होता है। योगी ने कहा, ''हमारे ऋषियों ने बहुत पहले यह कह दिया था।'' मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रत्येक पशु, पेड़-पौधे संवेदनशील होते हैं और दुनिया को यह विचार भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि महर्षि कनद ने अणु के बारे में बोला था और आज 'गॉड पार्टिकल' के बारे में बात की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा, ''हम ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में इसलिए पिछड़ गए क्योंकि हमने हमारे ज्ञान को धार्मिक दृष्टिकोण से अपनाया, लेकिन इसकी व्यवहारिक प्रकृति को अपनाने का प्रयास नहीं किया।

वायुसेना जरूरत पड़ने पर सीमित समय में इच्छित कार्रवाई करने में सक्षम : एयर चीफ मार्शल चौधरी

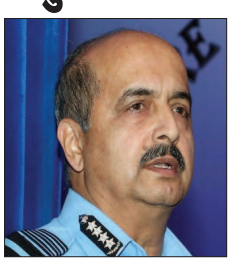

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी ने रविवार को कहा कि भारत को अस्थिर पश्चिमी और उत्तरी सीमा पर मौजूद स्थिति को ''दो मोर्चों'' के तौर पर देखना चाहिए और उसी के अनुरूप तैयारी करनी चाहिए। उन्होंने यह बात चीन और पाकिस्तान के दोहरे सैन्य खतरे से उत्पन्न होने वाली संभावित चुनौतियों का संदर्भ देते हुए कही। वायुसेना प्रमुख ने दिए विशेष साक्षात्कार में कहा, 'भविष्य में भारत पर सभी मोर्चों से हमला हो सकता है, जिसमें सैन्य गतिरोध से लेकर दुष्प्रचार और ब्लैकआउट तक शामिल है।

ऐसे में भारत के सुरक्षा सिद्धांत और क्षमताओं को इन आशंकाओं का मुकाबला करने में सक्षम होना चाहिए।÷ जब उनसे विशेष तौर पर पूछा गया कि क्या यूक्रेन के खिलाफ रूस की आक्रमकता चीन को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर और अधिक आक्रमक रुख अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेगी तो उन्होंने कहा कि वैश्विक घटनाओं और भूराजनीतिक घटनाक्रमों से भारत-चीन संबंधों पर पड़ने वाले असर का लगातार विस्तृत तौर पर और सभी स्तरों पर आकलन किया जा रहा है। उन्होंने कहा, ''एक राष्ट्र के तौर पर हमें अपने मौजूदा और भविष्य के खतरों की सटीक पहचान करने की जरूरत है, ताकि उनका मुकाबला करने के लिए जरूरी क्षमता का विकास किया जा सके।'' पूर्वी लद्दाख में सीमा पर गतिरोध के बीच चीन द्वारा एलएसी के पास तेजी से हवाई संसाधन तैनात करने के सवाल पर उन्होंने कहा, ''वायुसेना जरूरत पड़ने पर बहुत सीमित समय में इच्छित कार्रवाई कर सकती है।''

तेज हो रही भूराजनीतिक उथल-पुथल का जिक्र करते हुए वायुसेना प्रमुख ने रेखांकित किया कि भविष्य के किसी भी संघर्ष के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा के सभी तत्वों को जोड़ने की जरूरत होगी, ताकि ''ऑल ऑफ नेशन एप्रोच'' अपनाया जा सके। उन्होंने कहा, ''हमारे सामने पश्चिमी और उत्तरी सीमा पर कुछ चुनौतियां मौजूद हैं। ऐसे में यह भारत के लिए अहम है कि वह दो अस्थिर सीमाओं को ''दो आकस्मिक मोर्चों'' के तौर पर देखे और उसी के अनुसार तैयारी करे।'' वायुसेना प्रमुख ने कहा कि भारत की सैन्य अभियान योजना, क्षमता विकास और प्रशिक्षण दोनों मोर्चों पर विस्तृत तौर पर उत्पन्न होने वाले खतरों से निपटने के लिए होना चाहिए। भारत के पहले प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) बिपिन रावत और पूर्व सेनाध्यक्ष एम एम नरवणे सहित कई शीर्ष सैन्य अधिकारियों ने उत्तरी और पश्चिमी मोर्चे पर समन्वित खतरे को लेकर चिंता जताई थी। लेकिन यह पहली बार है, जब एक सेवारत सशस्त्र बल प्रमुख ने ऐसे खतरों से निपटने के लिए विस्तृत योजना बनाने का आह्वान किया है।

एयर चीफ मार्शल चौधरी ने कहा, ''हम अल्पाकलिक अभियानों से जुड़ी तैयारियों की अहमियत को समझते हैं, जिसके लिए त्वरित योजना बनाने, तेजी से अपने संसाधनों की तैनाती करने और वांछित प्रतिक्रिया देने की जरूरत पड़ेगी।'' उन्होंने कहा, ''वायुसेना लगातार संबंधित पहलुओं पर काम कर रही है, ताकि इन चुनौतियों से निपटने के लिए विश्वसनीय बल तैयार किया जा सके।'' वायुसेना प्रमुख की यह टिप्पणी भारत के सुरक्षा योजनाकारों द्वारा वृहद तौर पर यह महसूस किए जाने के बाद आई है कि देश को तेजी से बदलते भू-राजनीतिक हालात और चीन द्वारा एलएसी पर दीर्घकालिक सैन्यीकरण की रणनीति के मद्देनजर वृहद सुरक्षा ढांचा बनाने की जरूरत है। एयर चीफ मार्शल चौधरी ने कहा, ''हमें दीर्घकालिक रुख अपनाने और मौजूदा स्थिति के आधार पर खतरों का आकलन करने के बजाय दुश्मन बलों की तैयारियों से हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ने वाले असर को आंकने की जरूरत है।'' उन्होंने कहा, ''हम अपनी पश्चिमी और उत्तरी सीमा पर अलग-अलग चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, यह प्रकृति और संख्या के संदर्भ में है।

अमेरिकी थल सेना के सैनिक ने सैन्य टुकड़ी पर हमले की साजिश रचने का अपराध स्वीकार किया

न्यूयार्क। अमेरिकी थल सेना के एक सैनिक ने 2020 में एक हमले के ज़रिये अपनी सैन्य टुकड़ी के सदस्यों की हत्या की साजिश रचने का अपराध स्वीकार किया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। लुइसविले,केनटकी के रहने वाले एथन फेलन मेलजर (24) ने बताया कि वह एक समूह की ओर से इस हमले को अंजाम देना चाहता था जो पश्चिमी सभ्यता को नष्ट करने के लिए हिंसा को बढ़ावा देता है। मेलजर ने मैनहट्टन संघीय अदालत में अपना अपराध स्वीकार किया। मामले में अगले साल छह जनवरी को सजा सुनाई जाएगी। अमेरिकी सैनिकों की हत्या की कोशिश करने, आतंकवादियों की मदद करने की कोशिश करने और राष्ट्रीय रक्षा सूचना साझा करने का अपराध स्वीकार करने को लेकर उसे 45 साल की कैद की सजा हो सकती है। अदालती दस्तावेजों के मुताबिक, संघीय अधिकारियों ने कहा कि मेलजर दिसंबर 2018 में सेना में शामिल होने से पहले एक कट्टरपंथी हिंसक समूह का सदस्य था जिसे 'ऑर्डर ऑफ नाइन एंजल्स' या 09ए के नाम से जाना जाता है।

यूएई में अंतिम सांसें गिन रहे परवेज मुशर्रफ, परिवार समेत चुपके से मिलने पहुंचे पाक आर्मी चीफ बाजवा

दुबई । संयुक्त अरब अमीरात में अंतिम सांसें गिन रहे पाकिस्तान के पूर्व तानाशाह और कई मुकदमों में वांछित परवेज मुशर्रफ से मिलने के लिए सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा चुपके से दुबई गए थे। पाकिस्तानी मीडिया ने यह खुलासा किया है। यही नहीं जनरल बाजवा के साथ उनकी पत्नी और पाकिस्तानी सेना के शीर्ष डॉक्टर भी मौजूद थे।

मुशर्रफ पर पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की हत्या करवाने समेत कई आरोप हैं और वह जेल से बचने के लिए साल 2018 से ही यूएई में रह रहे हैं। मुशर्रफ के परिवार ने जनरल बाजवा का स्वागत किया। मुशर्रफ अमाइलॉइडोसिस नामक बीमारी से जूझ रहे हैं। ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) के अनुसार यह अमाइलॉइडोसिस बीमारी पूरे शरीर के अंगों और ऊतकों में अमाइलॉइड नामक असामान्य प्रोटीन के निर्माण के कारण होती है। अगर इसका इलाज नहीं किया गया तो शरीर के अंग काम करना बंद कर देते हैं। इससे पहले मुशर्रफ ने इच्छा जताई थी कि उन्हें पाकिस्तान जाने की अनुमति दी जाए। हालांकि इलाज की सही सुविधा नहीं होने की वजह से परिवार अभी उन्हें ले आने को तैयार नहीं है। मुशर्रफ को डारातुमुमैब दवा की जरूरत है, जो उन्हें पाकिस्तान में नहीं मिल पाएगी। पाकिस्तानी सेना और सरकार ने आश्वासन दिया है कि मुशर्रफ को स?वदेश वापसी करने दिया जाएगा।

मुशर्रफ ने साल 1999 में नवाज शरीफ की सरकार का तख्तापलट करके पाकिस्तान पर कब्जा कर लिया था और साल 2001 से लेकर 2008 तक देश के राष्ट्रपति रहे थे। तानाशाह की वजह से कई साल तक निर्वासन झेलने वाले नवाज शरीफ ने भी दुश्मनी को भूलते हुए मुशर्रफ के वापसी का विरोध नहीं किया है। बता दें कि 17 दिसंबर 2019 को पाकिस्तान की एक विशेष अदालत ने मुशर्रफ को राजद्रोह के केस में दोषी पाया था और उन्हें मौत की सजा सुनाई थी। इस सुनवाई को नवाज शरीफ ने शुरू कराया था। नवाज शरीफ साल 2013 में तीसरी बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री चुने गए थे। जनरल मुशर्रफ पहले ऐसे आर्मी चीफ थे जिन्हें राजद्रोह का सामना करना पड़ा और इस पूरे मामले पर पाकिस्तानी सेना की नजर थी। पाकिस्तानी सेना ने एक बयान जारी करके कहा था कि निश्चित रूप से राजद्रोही नहीं हो सकते हैं।

गंभीर बीमारियों से जूझ रहे बच्चों को कोरोना से मौत का खतरा

-22 महीने के दौरान किए गए अध्ययन से पता चला

लंदन । ब्रिटेन में पिछले 22 महीने के दौरान किए गए अध्ययन में पता चला है कि बच्चों में कोविड-19 से मौत होने का खतरा बहुत कम होता है। अध्ययन करने वाली टीम ने पाया कि कोरोना वायरस संक्रमण होने से उन बच्चों के गंभीर रूप से बीमार होने या मौत की आशंका ज्यादा है जो पहले से गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं। यह अध्ययन मार्च 2020 से दिसंबर 2021 तक कोविड-पॉजिटिव की वजह से बच्चों की हुई सभी मौतों का विश्लेषण कर किया गया था। हालांकि, इन आंकड़ों का अभी पीर रिव्यु किया जाना बाकी है। लेखक यूके हेल्थ सिक्योरिटी एजेंसी- सरकारी सार्वजनिक स्वास्थ्य एजेंसी-लंदन यूनिवर्सिटी, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और एनएचएस फाउंडेशन ट्रस्ट से जुड़े हैं। शोधकर्ताओं ने मार्च 2020 से दिसंबर 2021 तक इंग्लैंड के एक्टिव नेशनल सर्विलांस डेटा का विश्लेषण किया। अध्ययन में कहा गया है कि इनमें से सिर्फ 81 मौतें (43,8 फीसदी) कोविड के कारण हुई थी। अध्ययन में पॉजिटिव रिपोर्ट आने के 100 दिनों के भीतर हुई मौतों को ही गिना गया था।एक्टिव नेशनल सर्विलांस किसी भी मामले की बारीकी से निगरानी करने के लिए जानी जाती है। कोविड के मामले में संक्रमण को ध्यान में रखकर आंकड़े तैयार किए गए थे। इस दौरान 20 साल से कम उम्र के 185 बच्चों और युवाओं की मौतें हुईं। ये सभी कोविड पॉजिटिव थे।

युंगाडा की महिला ने 40 की उम्र तक 44 बच्चों को जन्म दे चुकी

-हाइपर ओव्यूलेशन की बीमारी के कारण हुए बच्चे

कंपाला । हर महिला चाहती हैं, कि वह मां बने। कुछ महिलाएं मां ना बन पाने के कारण आजीवन दुखी रहती हैं, लेकिन आज हम आपको एक ऐसी महिला के बारे में बताने जा रहे हैं, जो 40 की उम्र तक 44 बच्चों को जन्म दे चुकी है। महिला ने जब बर्थ कंट्रोल के बारे में सोचा, तब डॉक्टर्स ने कहा कि परिवार नियोजन का कोई भी तरीका उन पर काम नहीं करेगा। साथ ही उन्हें चेतावनी भी दी गई कि अगर उन्होंने बच्चों को जन्म देना बंद कर दिया, तब उन्हें गंभीर बीमारियां भी हो सकती हैं या फिर जान भी जा सकती है। ये महिला 44 बच्चों का पालन-पोषण अकेले ही करती हैं। खबरों के अनुसार 44 बच्चों को जन्म देने वाली मां का नाम मरियम नबातांज है, जो पूर्वी अफ्रीका के युगांडा की रहने वाली हैं। अभी उनकी उम्र 43 साल है, और वे 40 साल की उम्र तक 44 बच्चों को जन्म दे चुकी थीं। मरियम ने सिर्फ एक बार ही उन्होंने सिंगल बच्चे को जन्म दिया। इसके अलावा चार बार जुड़वां, पांच बार तीन और चार बार पांच बच्चों को जन्म दिया। उनके छह बच्चों की मृत्यु हो चुकी है। अभी जीवित 38 बच्चों में 20 लड़के और 18 लड़कियां हैं, जिन्हें वे अकेले ही पाल रही हैं। मरियम जब 12 साल की थीं, तब उनके माता-पिता ने उन्हें शादी के बहाने बेच दिया था। 13 साल की उम्र में उन्होंने पहले बच्चे को जन्म दिया था। पहले बच्चे के जन्म के बाद मरियम को अहसास हुआ कि उनकी फर्टिलिटी अन्य महिलाओं की अपेक्षा अधिक है. जब उनके लगाता इतने अधिक बच्चे होते गए, तब वह डॉक्टर के पास गईं और तब उन्हें डॉक्टर ने एक मेडिकल कंडिशन के बारे में बताया था। डॉक्टर्स ने मरियम को बताया, उसके अंडाशय असामान्य रूप से बड़े हैं, जिसके कारण उसके शरीर में हाइपर ओव्यूलेशन नामक स्थिति बनी है। हाइपर-ओव्यूलेट स्थिति आनुवांशिक होती है। इस स्थिति में ज्यादा बच्चे पैदा करने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। स्त्री रोग विशेषज्ञ के मुताबिक, मरियम की फर्टिलिटी काफी अधिक थी, इस कारण वह इतने अधिक बच्चे पैदा कर रही थीं। मरियम की स्थिति में कोई भी बर्थ कंट्रोल तकनीक काम नहीं करती और अगर ऐसा किया भी जाता, तब उन्हें गंभीर बीमारियां का खतरा भी हो सकता था। हालांकि, हाइपर ओव्यूलेशन का इलाज मौजूद है लेकिन युगांडा के ग्रामीण इलाके में उन तकनीकों का आना काफी मुश्किल था।

अमेरिका- शीर्ष कोर्ट के महिलाओं के गर्भपात अधिकार खत्म करने के बाद सेम-सेक्स मैरिज के अधिकार खत्म करने की अटकलें

वॉशिंगटन । अमेरिकी के सर्वोच्च न्यायालय ने 1973 में रो बनाम वेड मामले में अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में महिलाओं को दिए गए गर्भपात के संवैधानिक अधिकार को खत्म कर दिया है। इसके बाद वहां सेम-सेक्स मैरिज और गर्भनिरोधकों के उपयोग के अधिकार के भी खत्म होने की अटकलें लगाई जाने लगी हैं। उदार सामाजिक नियमों के पक्षधर लोगों की राय है कि अब रूढ़िवादियों के लिए समलैंगिक विवाह को चुनौती देने का रास्ता साफ हो गया है। इसके लिए रूढ़िवादी जल्द ही अपनी मांग को सामने रखने के लिए आगे आ सकते हैं।

एक खबर के मुताबिक इस आशंका को सुप्रीम कोर्ट के फैसले से भी बल मिला है। जिसमें एक न्यायाधीश जस्टिस क्लेरेंस थॉमस ने यह साफ कर दिया कि संविधान के 18वीं शताब्दी के निर्माताओं ने जिन अन्य अधिकारों का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है, 'भविष्य के मामले' उन अधिकारों को कम कर सकते हैं। जस्टिस थॉमस ने सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसलों का जिक्र करते हुए कहा कि इन्होंने ही गर्भनिरोधक, समान-सेक्स और समान-लिंग विवाह को वैध बनाया। सुप्रीम कोर्ट के फैसलों ने उन अधिकारों को स्थापित किया जिन्हें बिल ऑफ राइट्स में स्पष्ट रूप से शामिल नहीं किया गया था।

थाईलैंड में मिस इंटरनेशनल क्वीन ट्रांसजेंडर ब्यूटी कटेस की विजेता फिलीपींस की फुसिया एनी रवीना को किस करती हुई उपविजेता कोलंबिया की जैसमीन व फ्रांस की एलीया केनल।

यूक्रेन में मारियुपोल के बाद दूसरे बड़े शहर सेवेरोडोनेत्स्क पर भी रूसी सैनिकों ने किया कब्जा

कीव । रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध में रूस के राष्ट्रपति पुतिन की सेना ने बड़ी कामयाबी हासिल की है। रूसी सेना ने सेवेरोडोनेत्स्क पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया है। पूर्वी यूक्रेन के शहर के मेयर ने इसकी जानकारी दी है। रणनीतिक शहर और यूक्रेनी प्रतिरोध के प्रतीक को बचाने के लिए कई हफ्तों की लड़ाई के बाद यह जंग के मैदान में यूक्रेन के लिए एक बड़ा झटका है। रूसी मिसाइलों ने शनिवार को यूक्रेन के पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों को भी निशाना बनाया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप की सबसे बड़ी लड़ाई अपने पांचवें महीने में प्रवेश कर चुकी है। अब तक दोनों पक्षों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है, लेकिन न ही यूक्रेन घुटने को तैयार है और न ही रूस पीछे हटने का इरादा रखता है। वेरोडोनेत्स्क शहर कभी 1,00,000 लोगों का घर था जिसे रूसी सेना ने अब मलबे के ढेर में बदल दिया है। पिछले महीने मारियुपोल पर कब्जे के बाद यह पुतिन के लिए युद्ध में बड़ी कामयाबी है। शहर के मेयर ऑलेक्ज़ंडर स्ट्रायुक ने नेशनल टेलीविजन पर कहा शहर अब पूरी तरह से रूस के कब्जे में है। उन्होंने कहा कि कोई भी जो पीछे छूट गया है, अब यूक्रेनी कब्जे वाले इलाके में नहीं पहुंच सकता क्योंकि शहर पूरी तरह कट चुका है। रूसी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता इगोर कोनाशेनकोव ने कहा कि शहर के अजोट केमिकल प्लांट को प्रतिरोध का एक और केंद्र बनाने का यूक्रेनी प्रयास विफल हो गया।

यूरोप में बाइडन का अभियानः रूस के खिलाफ गठबंधन को मजबूत करना

वाशिंगटन (एजेंसी)।

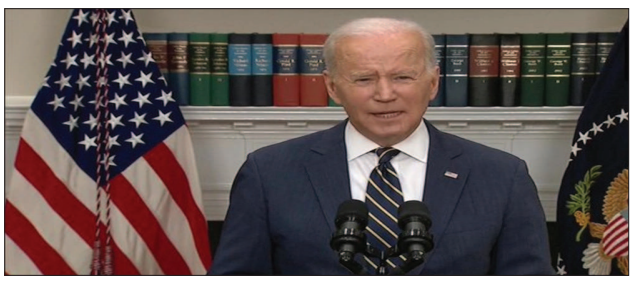

राष्ट्रपति जो बाइडन यूक्रेन पर आक्रमण के लिए रूस को दंडित करने के लिए निर्मित वैश्विक गठबंधन को बनाए रखने के लिए तैयार हैं। इस सिलसिले में वह यूरोप की पांच दिवसीय यात्रा पर जा रहे हैं, क्योंकि चार महीने पुराने रूस-यूक्रेन युद्ध के समाप्त होने के कोई संकेत नहीं हैं, जबकि इससे वैश्विक खाद्य व्यवस्था और ऊर्जा आपूर्ति की समस्या गंभीर होती जा रही है।

बाइडन पहले जर्मनी के बवेरियन आल्प्स में सात प्रमुख आर्थिक शक्तियों के समूह की बैठक में शामिल होंगे और बाद में 30 नाटो देशों के नेताओं के साथ एक शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए मैड्रिड रवाना होंगे। उनकी यह यात्रा यूक्रेन को मजबूत करने और रूस को उसकी आक्रामकता के लिए दंडित करने के लिए वैश्विक गठबंधन के रूप में हो रही है। इस संघर्ष के कारण खाद्य और ऊर्जा की कीमतें आसमान छू रही हैं।

इसके पहले रूस के हमला शुरू करने के कुछ ही हफ्तों बाद मार्च में बाइडन की यूरोप यात्रा के बाद से यूक्रेन युद्ध अधिक महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश कर गया। उस समय वह ब्रसेल्स में सहयोगियों से मिले, क्योंकि यूक्रेन में नियमित बमबारी हो रही थी। उन्होंने पोलैंड में पूर्वी यूरोप के भागीदारों को आश्वस्त करने की कोशिश की कि उन्हें मास्को की घुसपैठ का सामना नहीं करना पड़ेगा। अमेरिका के सहयोगियों में इस बात पर मतभेद है कि उनका लक्ष्य केवल शांति बहाल करना है या रूस को संघर्ष की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए एक गहरी कीमत चुकाने के लिए मजबूर करना है।

व्हाइट हाउस राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने कहा, ''हर देश अपने लिए बोलता है, हर देश को चिंता होती है कि वे क्या करने को तैयार है या नहीं है। लेकिन जहां तक गठबंधन की बात है, यह वास्तव में पहले कभी इतना अधिक मजबूत और व्यवहार्य नहीं रहा, जितना की आज है।''

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की वीडियो के जरिये दोनों शिखर सम्मेलनों को संबोधित करने के लिए तैयार हैं। अमेरिका और सहयोगियों ने उनके देश को अरबों डॉलर की सैन्य सहायता भेजी है और आक्रमण को लेकर रूस पर सख्त प्रतिबंध लगाए हैं।

शहबाज शरीफ ने बलूचिस्तान के लोगों से विदेशी निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया

इस्लामाबाद (एजेंसी)।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अशांत बलूचिस्तान प्रांत के ग्वादर के लोगों से चीनी निवेशकों समेत विदेशी निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया, जो गरीब लेकिन संसाधन संपन्न प्रांत के विकास के लिए भारी निवेश कर रहे हैं। ग्वादर चीन द्वारा विकसित और संचालित रणनीतिक बंदरगाह के लिए जाना जाता है, जहां हाल ही में चीनी श्रमिकों सहित विदेशी नागरिकों पर आतंकवादी हमले हुए हैं। अप्रैल में प्रधानमंत्री बनने के बाद शहबाज ने शुक्रवार को दूसरी बार क्षेत्र का दौरा किया और ग्वादर बिजनेस सेंटर में मछुआरों व अन्य लोगों की एक सभा को संबोधित किया। समाचार पत्र द डॉन की खबर के अनुसार शरीफ ने लोगों से कहा कि मित्र देश पाकिस्तान की मदद करना चाहते हैं और उन्हें सुरक्षा मुहैया कराना उनकी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा 'चीन, सऊदी अरब, यूएई, तुर्की, कतर और अन्य देश 75 वर्षों से पाकिस्तान को वित्तीय और राजनयिक मदद व सहयोग दे रहे हैं और देश को मुश्किल समय से बाहर निकाल रहे हैं। उन्होंने कहा, अगर हम उनके निवेशकों, इंजीनियरों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते हैं, तो वे वापस चले जाएंगे।

हत्या की अफवाहों के बीच इमरान के बेडरूम में जासूसी डिवाइस लगाने की कोशिश में सुरक्षाकर्मी गिरफ्तार

इस्लामाबाद (एजेंसी)।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की हत्या की अफवाहों के बीच बानी गाला का एक कर्मचारी उनके कमरे में जासूसी डिवाइस लगाने की कोशिश करता पकड़ा गया है। इस कर्मचारी को पूर्व प्रधानमंत्री के बेडरूम में उपकरण लगाने के लिए पैसे दिए गए थे। एक दूसरे कर्मचारी ने यह सूचना सुरक्षा टीम तक पहुंचा दी, जिसके बाद जासूसी के प्रयास को विफल कर दिया गया।

बानी गाला सुरक्षा दल ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान की जासूसी करने की कोशिश की सूचना मिलने पर कर्मचारी को हिरासत में ले कर संघीय पुलिस के हवाले कर दिया है। उल्लेखनीय है कि यह घटनाक्रम पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की हत्या की साजिश रचने की अफवाहों के बीच सामने आया है। इससे पहले इस खतरे को देखते हुए शहर के बानी गाला के आसपास के इलाकों में सुरक्षा एजेंसियों को हाई अलर्ट पर रखा गया था। पीटीआई के कई लोग दावा कर रहे हैं कि इमरान खान की जान को खतरा है। पीटीआई नेता शहबाज गिल ने कहा कि इस संबंध में हमने सरकार समेत सभी संबंधित एजेंसियों को सूचित कर दिया है। गिल ने दावा किया कि कर्मचारी पूर्व पीएम के कमरे की सफाई करता है। उसे जासूसी उपकरण लगाने के लिए भुगतान किया गया था। यह जघन्य और दुर्भाग्यपूर्ण है। हमारे लोगों को जानकारी हासिल करने के लिए धमकाया जा रहा है। इस तरह की शर्मनाक हरकतों से बचना चाहिए। गिरफ्तार' कर्मचारी ने कई खुलासे किए हैं, जिन्हें फिलहाल साझा नहीं किया जा सकता है।' गृहमंत्री राणा सनाउल्लाह ने इससे पहले 23 जून को इमरान खान को जान से मारने की धमकी देने के दावों को खारिज कर दिया था।

गरीबी से त्रस्त अफगानों के लिये एक और मुसीबत बनकर आया घातक भूकंप

काबुल (एजेंसी)।

अफगानिस्तान में इस सप्ताह आए जबरदस्त भूकंप ने देश के उन इलाकों को बुरी तरह प्रभावित किया है, जो पहले से ही भयंकर गरीबी से जूझ रहे हैं। देश में शनिवार को दूसरे देशों और संगठनों से मदद आई, लेकिन अधिकतर निवासियों को समझ नहीं आ रहा कि वे पर्वतीय इलाकों के बीच बसे गांवों में तबाह हुए हजारों मकानों को फिर से किस तरह बसाएंगे। सरकारी मीडिया का कहना है कि भूकंप में कम से कम 1,150 लोगों की मौत हो चुकी है। भूकंप ने सबसे अधिक तबाही ऊंचे पर्वतीय इलाकों पक्तिका और खोस्त प्रांतों में मचाई है, जो पाकिस्तान सीमा से लगे हैं। वहां कुछ भूमि उपजाऊ है, इसलिये लोग जैसे-तैसे करके गुजर बस करते हैं जबकि ज्यादातर लोग काम के लिए पाकिस्तान, ईरान या किसी अन्य देश प्रवास कर चुके अपने रिश्तेदारों द्वारा भेजे गए पैसों पर निर्भर हैं। बुधवार को आए भूकंप में मीरादीन गांव में सभी 24 मकान मलबे के ढेर में तब्दील हो गए हैं। रात में बारिश होने पर गांव के कई निवासी आसपास बनीं लकड़ी की झोपड़ियों में सोने को मजबूर हैं। भूकंप प्रभावित इलाकों में धीरे-धीरे मदद पहुंच रही है, लिहाजा उन्हें अब तक कोई सहायता भी नहीं मिली है। मीरादीन गांव के निवासियों ने एसोसिएटेड प्रेस से कहा कि वे इस बात को लेकर चिंतित हैं कि कुछ ही महीने में आने वाली भीषण ठंड से पहले वे अपने घर फिर से बना भी पाएंगे या नहीं। पर्वतीय इलाकों में गर्मी का मौसम कम समय का होता है और रात ठंडी होती है। पूरे भूकंप प्रभावित इलाके में यह डर महसूस किया जा रहा है, जहां माना जा रहा है कि तीन हजार मकान तबाह हो गए हैं। पक्तिका गायन जिले के निवासी दौलत खान ने कहा, हम कई परेशानियों का सामना कर रहे हैं। हमें हर प्रकार की सहायता चाहिए। हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय और हमारी मदद कर सकने वाले अफगानों से मदद का अनुरोध करते हैं। भूकंप के कारण मकान गिरने पर दौलत के परिवार के पांच सदस्य घायल हो गए। अफगानिस्तान में संयुक्त राष्ट्र बाल एजेंसी के प्रतिनिधि ने कहा कि बुधवार को आए 6 तीव्रता के भूकंप में मरने वालों में 121 बच्चे शामिल हैं और इनकी संख्या बढ़ सकती है। उन्होंने कहा कि लगभग 70 बच्चे घायल हैं। शुक्रवार को आए भूकंप के बाद के झटकों में पांच और लोगों की जान चली गई। अफगानिस्तान की सरकारी समाचार एजेंसी 'बख्तर' की खबर के अनुसार कुल 1,150 लोगों की मौत हुई है जबकि 1,600 लोग घायल हुए हैं।

प्रमुख सामयिक मुद्दों पर जी-7 नेताओं के साथ 'सार्थक चर्चा' की उम्मीदः मोदी

यूनिख (एजेंसी)।

जी-7 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए जर्मनी पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि वह जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, खाद्य सुरक्षा, आतंकवाद से मुकाबला, पर्यावरण, लैंगिक समानता और लोकतंत्र जैसे सामयिक मुद्दों पर विश्व नेताओं के साथ 'सार्थक चर्चा' होने की उम्मीद कर रहे हैं। जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के निमंत्रण पर मोदी 26 और 27 जून को होने वाले जी-7 शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए म्यूनिख गए हैं। जी-7 शिखर सम्मेलन के मेजबान जर्मनी ने इस बार भारत के अलावा अर्जेंटीना, इंडोनेशिया, सेनेगल और दक्षिण अफ्रीका को शिखर सम्मेलन के लिए अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है।

दुनिया के सात सबसे अमीर देशों के समूह जी-7 के अध्यक्ष के रूप में जर्मनी इस शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। मोदी ने ट्वीट किया जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए म्यूनिख पहुंचा हूं। मैं शिखर सम्मेलन के दौरान विश्व नेताओं के साथ सार्थक चर्चा होने की उम्मीद करता हूं।''म्यूनिख में आगमन पर भारतीय मूल के लोगों ने प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया। बर्लिन स्थित भारतीय दूतावास ने ट्वीट किया जी-7 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए म्यूनिख पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजदूत हरीश पर्वतनेनी और श्रीमति नंदिता पर्वतनेनी ने म्यूनिख हवाईअड्डे पर गर्मजोशी से स्वागत किया।

भारतीय मिशन ने एक ट्वीट में कहा भारतीय समुदाय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का म्यूनिख में गर्मजोशी से विशेष स्वागत किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने एक ट्वीट में कहा जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी-7 शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए जर्मनी पहुंचे हैं। वह जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता और अन्य मुद्दों पर जी-7 देशों के नेताओं के साथ होने वाली चर्चा में भाग लेने के अलावा कई द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे।

जी-7 नेताओं के यूक्रेन संकट पर ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद है, जिसने वैश्विक खाद्य और ऊर्जा संकट को बढ़ावा देने के अलावा भू-राजनीतिक उथल-पुथल को जन्म दिया है। मोदी ने अपनी यात्रा से पहले एक बयान में कहा शिखर सम्मेलन के सत्रों के दौरान मैं पर्यावरण, ऊर्जा, जलवायु, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, आतंकवाद का मुकाबला, लैंगिक समानता और लोकतंत्र जैसे सामयिक मुद्दों पर जी-7 काउंटी, जी-7 भागीदार

देशों और अतिथि अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करूंगा।

मोदी ने कहा कि वह पूरे यूरोप में बसे भारतीय समुदाय के सदस्यों से मिलने के लिए भी उत्सुक हैं, जो अपनी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ यूरोपीय देशों से भारत के संबंधों को समृद्ध करने में बहुत योगदान दे रहे हैं। जर्मनी से मोदी 28 जून को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जाएंगे और खाड़ी देश के पूर्व राष्ट्रपति शेख खलीफा बिन जायद अल नाहयान के निधन पर शोक व्यक्त करेंगे। पिछले कई वर्षों से बीमार चल रहे शेख खलीफा का 13 मई को निधन हो गया था।

संपादकीय

आर्थिक स्वार्थों की छाया में

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रिक्स की बैठक में कहा कि हमारा आपसी सहयोग कोविड के बाद विश्व व्यवस्था में आ रहे सुधार में उपयोगी योगदान दे सकता है। मोदी समेत विश्व के तमाम नेताओं को इस बात का नोटिस लेना चाहिए कि कोरोना के बाद यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ, इसके बाद दुनिया वैसी नहीं रह गई है, जैसी तीन साल पहले थी। 2009 में ब्राजील रूस, चीन और भारत को मिलाकर बनाया गया था ब्रिक, बाद में दक्षिण अ्रीका जुड़ा तो यह हो गया ब्रिक्स। कुल मिलाकर ब्रिक्स पांच बड़े विकासशील देशों का समूह है, जो 41 प्रतिशत वैश्विक आबादी, 24 प्रतिशत वैश्विक जीडीपी और 16 प्रतिशत वैश्विक कारोबार का प्रतिनिधित्व करता है। इस समूह का अपना बैंक है, जिसका नाम है न्यू डवलपमेंट बैंक पर इसे ब्रिक्स बैंक के नाम से जाना जाता जाता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस संगठन के तीन देश रूस, भारत और चीन दुनिया भर में अपनी अलग आतथक और रणनीतिक हैसियत रखते हैं। तीनों के आपसी रिश्ते उलझे हुए हैं पर स्वार्थों के संबंध सबसे सटीक संबंध होते हैं। इसलिए इनके रिश्तों में उस किस्म की दिशा रहने की उम्मीद है, जो सबके लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। कच्चे तेल के बाजार के समीकरण चीन और भारत ने बदल दिए हैंग और उसका लाभ रूस को हो रहा है। कच्चे तेल के बाजार में यूक्रेन युद्ध के बाद बहुत तेजी आई क्योंकि रूस पर लगे प्रतिबंधों का फायदा उठाकर तेल के परंपरागत आपूततकर्ता देशों-सऊदी अरब संयुक्त अरब अमीरात ने कच्चे तेल के भाव बढ़ा दिए। रूस ने संसाधनों को जुटाने के लिए कच्चे तेल पर छूट देकर बेचना शुरू किया। चीन और भारत ने रूस से कच्चा तेल जमकर खरीदना शुरू किया। पश्चिमी देशों ने इस बात का बुरा माना, अमेरिका ने आपत्ति की। पर भारत ने साफ कर दिया कि हमारे अपने हितों से ऊपर कुछ नहीं है। दोस्तियां और दुश्मनियां अपनी जगह हैं पर जो भी देश के हित में होगा, भारत करेगा। तो इसका परिणाम है कि भारत अब रूस से बड़ी तादाद में कच्चा तेल खरीद रहा है। रूस को कच्चे तेल के बाजार मजबूत ग्राहक मिले, तो सऊदी अरब आदि को कच्चे तेल की कीमत कम करनी पड़ी। चीन और भारत के बीच तनाव भी चलता है, और कारोबार भी। चीनर रूस और भारतर तीनों ब्रिक्स के महद्मवपूर्ण देशर आतथक स्वार्थों की छाया में इनके सामरिक राजनीतिक संबंधों और समीकरणों में कुछ बुनियादी बदलाव आ गए तो दुनिया के लिए ब्रिक्स बहुत ही महद्मवपूर्ण संगठन बनकर उभरेगा।

फिर याद आया, वह काला दिन!

26 जून 1975 का काला दिन आज 46 साल बाद मुझे फिर याद आया। 25 जून 1975 की मध्य रात्रि को राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद ने आपात्काल की घोषणा पर आंख मींचकर हस्ताक्षर कर दिए। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के जीहुजूरों ने दिल्ली के कई बड़े अखबारों की बिजली कटवा दी थी और देश के जो अखबार जल्दी छपते थे, उनमें वह खबर ही नहीं छपी। उस दिन मैं इंदौर में था। मैं सुबह-सुबह मेरे घनिष्ठ मित्र और आर.एस.एस. के प्रचारक कुप्प सी. सुदर्शनजी से मिलने गया। वे जवाहर मार्ग के एक अस्पताल में पांव की हड्डी का इलाज करवा रहे थे। सुबह 8 बजे जैसे ही उन्होंने अपना ट्रांजिस्टर खोला, पहली खबर थी कि देश में आपात्काल की घोषणा हो गई है। मैं तुरंत वहीं से हिंदी के तत्कालीन श्रेष्ठ अखबार 'नई दुनिया' के दफ्तर पहुंचा। मैं छोटी उम्र से ही उसमें लिखने लगा था। उस समय माना जाता था कि वह एक कांग्रेसी अखबार है। उसके मालिक लाभचंदजी छजलानी, प्रधान संपादक राहुल बारपुते और संपादक अभय छजलानी समेत सभी प्रमुख लोग दफ्तर में उपस्थित थे। मेरे सुझाव पर यह तय हुआ कि संपादकीय की जगह को खाली छोड़ देना विरोध का सर्वोत्तम उपाय है, क्योंकि आपात्काल के विरोध पर भी प्रतिबंध की घोषणा हो चुकी थी। मैं दोपहर की रेल पकड़कर दिल्ली आ गया। मैं उस समय 'नवभारत टाइम्स' (देश के सबसे बड़े अखबार) का सह-संपादक था। संपादक श्री अक्षयकुमार जैन ने सभी पत्रकारों की सभा बुलाई और आपात्काल का विरोध नहीं करने की सख्त हिदायत दी। सभा के बाद मैंने अक्षयजी से कहा कि मैं इस्तीफा दे देता हूं। मैं सरकार की खुशामद में एक शब्द भी नहीं लिखूंगा। उन्होंने कहा कि आप विदेशी मामलों के विशेषज्ञ हैं। मैं आपसे राष्ट्रीय राजनीति पर कोई संपादकीय ही नहीं लिखवाऊंगा। दूसरे दिन प्रेस क्लब में कुलदीप नय्यर ने आपात्काल के विरोध में दिल्ली के पत्रकारों की एक सभा बुलाई। पहले उनका भाषण हुआ, दूसरा मेरा। मैंने सारे उपस्थित पत्रकारों से कहा कि वे सब आपात्काल के विरोध-पत्र पर दस्तखत करें। दो-तीन मिनिट में ही सारा हाल खाली हो गया। उन दिनों हम जो भी संपादकीय या लेख लिखते थे, उसे चपरासी के हाथों शास्त्री भवन में बैठे एक मलयाली अफसर के पास भिजवाना पड़ता था। उसकी हां होने पर ही वह छपता था। जून 1976 में मेरे द्वारा संपादित महाग्रंथ 'हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम' का राष्ट्रपति भवन में विमोचन हुआ। उप-राष्ट्रपति ब.दा. जत्ती सहित कई वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री और सैकड़ों पत्रकार देश भर से उपस्थित थे। लेकिन मैंने प्रधानमंत्री इंदिराजी को उसमें निमंत्रित नहीं किया था। अक्षयजी को मैंने बता दिया था कि यदि आप उन्हें निमंत्रित करेंगे तो मैं उनके साथ मंच पर नहीं बैठूंगा, हालांकि इंदिराजी मुझे खूब जानती थीं और मेरे मन में उनके लिए बहुत सम्मान भी था लेकिन आपात्काल के दौरान मेरे पिताजी (इंदौर) में और जयप्रकाशजी, चंद्रशेखरजी, अटलजी, मोरारजी भाई और ढेरों समाजवादी और जनसंघी मित्र लोग जेल में बंद थे। आपात्काल के दौरान मधु लिमये, जार्ज फर्नांडीज़, कमलेश शुक्ल, स्वामी अग्निवेश आदि मित्रगण से जैसे-तैसे संपर्क बना हुआ था। कई समाजवादी, जनसंघी और पूर्व कांग्रेसी नेता सफदरजंग एनक्लेव के मेरे उस घर में लुक-छिपकर रहा भी करते थे। उन दिनों जहां भी मेरे भाषण हुए, मैंने आपात्काल की आलोचना की, एक बार सूचना मंत्री विद्याचरण शुक्ल की उपस्थिति में जबलपुर विश्वविद्यालय के एक समारोह में भी। अन्य कई संस्मरण फिर कभी!

चिंतन-मनन

प्रोध का जवाब प्रोध नहीं

एक बार एक ब्राह्मण ने महात्मा बुद्ध को अपने घर आकर, भोजन करने का निमंत्रण दिया। जब बुद्ध वहां पहुंचे तो उन्होंने पाया कि ब्राह्मण ने उन्हें किसी अन्य मकसद से वहां बुलाया था। ब्राह्मण उनकी निंदा करने लगा और उन्हें अपशब्द कहने लगा। बुद्ध ब्राह्मण के वचनों के वार चुपचाप सहते रहे। अंत में बुद्ध ने कहा,'हे ब्राह्मण जी, क्या आपके घर में मेहमान आते रहते हैं?' 'हां, आते हैं।' ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

बुद्ध ने पूछा, 'जब मेहमान आते हैं तो आप उनके लिए क्या भोजन बनाते हैं?' ब्राह्मण ने उत्तर दिया,'हम एक बड़े भोज की तैयारी करते हैं।' बुद्ध ने पूछा, 'अगर वे नहीं आते तो आप क्या करते हैं?' ब्राह्मण बोला, 'हम भोज स्वयं खा लेते हैं।' बुद्ध बोले,'अच्छा, तुमने मुझे भोजन पर बुलाया पर तुमने मेरा स्वागत कठोर वचनों और आलोचना से किया। लगता है कि जो भोज तुम मुझे परोसने वाले थे, वह इसी का है। मैं तुम्हारे द्वारा परोसे भोजन को नहीं खाना चाहता। कृपया इसे वापस ले लो और स्वयं खाओ।'

बुद्ध ने महसूस किया कि जो भोज उन्हें दिया गया था, वह खाद्य पदार्थों का नहीं, बल्कि गालियों का था। उन्होंने वापस मुड़कर ब्राह्मण का तिरस्कार करने और उसे अपशब्द कहने के बजाय उसके प्रोध को स्वीकार नहीं किया। बल्कि वे उस स्थान से चले गए। इस प्रकार, प्रोध उसी के साथ रहा जो उसे प्रकट कर रहा था। महात्मा बुद्ध के शिष्य यह देख रहे थे। बुद्ध ने उन्हें सलाह दी, 'कभी उस रूप में बदला न लो जिस रूप में सलूक आपके साथ हुआ हो। घृणा कभी घृणा से खत्म नहीं होती।'

कई बार हमारा सामना ऐसे लोगों से होता है जो हमें बुरा-भला कहते हैं। उनके स्तर पर उतरने की जगह हमें उनके उपहारों को स्वीकार नहीं करना चाहिए। तब उनका प्रोध उनके साथ ही रहेगा। जब हम घटना स्थल से हट जाएंगे तो वे अपने आपको, अपने प्रोध के साथ अकेला पाएंगे। वे चकित होंगे कि उनके प्रोध के बावजूद हम प्रेममय बने रहे। वे हमें आदर देने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

जैसे दिन गुजरे और हमारा सामना ऐसे लोगों से हो जो हमारे प्रति प्रोध और आलोचना से भरे हों तो हम उनके वचनों को शांति से सुनें। हमें यह देखना चाहिए कि उनके वचनों में क्या कोई सच्चाई है। अगर ऐसा है तो हम उनके वचनों से कुछ सीखें और अपने आपको सुधारें। अगर उनके वचनों में कुछ भी सत्य नहीं है, तब हम उनके प्रोध के उपहार को स्वीकार न करें। हम उनके स्तर पर न उतर आएं। हम उनके प्रतिकूल वातावरण में शांति डालें। हमें प्रोध के उपहार को उनके पास छोड़ देना चाहिए और अपने शांत, खुशहाल रास्ते पर चल देना चाहिए।

सेनापति बन गया 'सेना' का दुश्मन

जिन्होंने बाला साहेब की उग्र हिंदुत्व मार्के वाले राजनीति देखी हैग वो यह देखकर ही हैरान थे कि कैसे शिवसेना की सरकार में उद्धव के मुख्यमंत्री रहते पालघर में साधुओं की लिंचिंग हुई मुंबई पुलिस पर वसूली के आरोप लगे बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की रहस्यमय मौत में ठाकरे परिवार के वंशज का नाम उछला और मस्जिद के लाउडस्पीकरों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करते हुए सार्वजनिक रूप से हनुमान चालीसा के पाठ पर रोक लगाने जैसे फैसले लिए गए। दर्द इतना भर ही नहीं था। शिवसेना कैडर के बीच यह धारणा भी जड़ पकड़ रही थी कि मुख्यमंत्री भले ही उद्धव होंग लेकिन सत्ता का रिमोट शरद पवार के हाथों में है

उपेन्द्र राय

महाराष्ट्र के राजनीतिक संकट में सियासत का एक बड़ा सबक है। राजनीति में संवाद की खिड़की बंद हो जाए तो सियासी असंतोष का दरवाजा खुल जाता है। महाराष्ट्र में तो यह दरवाजा ऐसा खुला है कि सरकार के सिर से छत और पैरों के नीचे से जमीन तक खिसक गई है। राज्य की महाविकास अघाड़ी सरकार पर यह संकट गठबंधन के प्रमुख घटक शिवसेना में हुई बगावत की वजह से आया है। बगावत के सूत्रधार सरकार के प्रमुख मंत्री एकनाथ शिंदे महाराष्ट्र से हजारों किलोमीटर दूर गुवाहाटी में डेरा डाले हुए हैं, जहां उनका साथ देने वाले बागी विधायकों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। हालांकि जिस संख्या का शिंदे दावा कर रहे हैं, उसके हिसाब से सरकार को अब तक गिर जाना चाहिए था। दूसरी तरफ अघाड़ी सरकार इस मामले को तकनीकी और कानूनी पहलुओं में उलझाकर लड़ाई को लंबा खींचने के मूड में है। बहरहाल, इस संकट का नतीजा जो भी निकले, जिस सबक को लेकर मैंने अपनी बात शुरू की थी वो अपनी जगह स्थापित रहेगा।

आखिर महाविकास अघाड़ी सरकार और शिवसेना को यह दिन देखने की नौबत क्यों आई? इसका जिम्मेदार खुद इस सरकार के मुखिया और सेना के सेनापति हैं, जो संयोग से एक ही व्यक्ति हैं उद्धव ठाकरे। उद्धव इन दोनों जिम्मेदारियों पर खरे नहीं उतर सके। मुख्यमंत्री के रूप में वो एक ऐसे गठबंधन का नेतृत्व कर रहे थे जो उनकी पार्टी के अधिकतर विधायक ही नहीं, शिवसेना के ज्यादातर समर्थकों की नजरों में भी एक बेमेल गठबंधन था। दूसरी तरफ शिवसेना के मुखिया होने के बावजूद वो शिवसैनिकों की तुलना में एनसीपी और कांग्रेस नेताओं के लिए ज्यादा सुलभ थे।

महाविकास अघाड़ी पर यह संकट आएगा, यह भी पहले से तय था। इसकी पटकथा तीन साल पहले तभी लिख दी गई थी जब महाराष्ट्र के लोगों ने शिवसेना और बीजेपी गठबंधन को सत्ता में लाने के लिए वोट दिया था। गठबंधन की सरकार तो बनीग लेकिन किरदार बदल गए। बीजेपी की जगह ले ली एनसीपी और कांग्रेस ने। बहुत लोग इसके लिए उद्धव ठाकरे की मुख्यमंत्री बनने की महद्मवाकांक्षा को जिम्मेदार मानते हैग तो ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जिनका मानना है कि बीजेपी के 'सियासी मंसूबों' को लेकर उद्धव कभी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं रहे। 2014 में भी जब दोनों दलों ने मिलकर सरकार चलाई थी, तब साथ रहकर भी शिवसेना का उद्धव गुट बीजेपी का विरोध करता था। बहरहाल, 2019 में मौका मिलते ही उद्धव ने साथ मिलकर चुनाव लड़ने के बावजूद बीजेपी से किनारा करते हुए एनसीपी और कांग्रेस की मदद से मुख्यमंत्री बनने का अपना सपना पूरा कर लिया। बहुतों ने इसे उद्धव का बीजेपी को धोखा देना करार दिया। हालांकि तथाकथित 'धोखे वाली यह सरकार' अपना कामकाज करती रही, लेकिन अधिकांश शिवसैनिकों को लगता रहा कि उनकी विचारधारा एनसीपी और कांग्रेस से मेल नहीं खाती है। मौके-बेमौके पर कई शिवसैनिकों ने खुलकर विरोध भी किया और यहां तक कहा कि अगर बाला साहेब जिंदा होते, तो ऐसे बेमेल गठबंधन को कभी अनुमति नहीं देते।

बात ठीक भी लगती है। जिन्होंने बाला साहेब की उग्र हिंदुत्व मार्के वाले राजनीति देखी है, वो यह देखकर ही हैरान थे कि कैसे शिवसेना की सरकार में उद्धव के मुख्यमंत्री रहते पालघर में साधुओं की लिंचिंग हुईग मुंबई पुलिस पर वसूली के आरोप लगे, बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की रहस्यमय मौत में ठाकरे परिवार के वंशज का नाम उछला और मस्जिद के लाउडस्पीकरों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करते हुए सार्वजनिक रूप से हनुमान चालीसा के पाठ पर रोक लगाने जैसे फैसले लिए गए।

दर्द इतना भर ही नहीं था। शिवसेना कैडर के बीच यह धारणा भी जड़ पकड़ रही थी कि मुख्यमंत्री भले ही उद्धव हों, लेकिन सत्ता का रिमोट शरद पवार के हाथों में है और उनके मंत्रियों की तुलना में एनसीपी-कांग्रेस के मंत्रियों को ज्यादा तवज्जो मिल रही है। बागी विधायकों ने अपने पत्र में आरोप भी लगाया कि मुख्यमंत्री उद्धव उनकी पहुंच के बाहर हो गए थे। सचिवालय वो जाते नहीं थे, मातोश्री में उनके चाटुकार उद्धव और उनके बीच दीवार बन जाते थे। एक तरह से कोटरी और कोटरी के बीच फंस कर रह गए थे उद्धव। अब वो फंसे थे या यह व्यवस्था उनकी खुद की पसंद थीग यह तो उद्धव से बेहतर कोई नहीं बता सकता।

दरअसल उद्धव के पास राजनीतिक दूरदतशता का भी अभाव दिखता है। जिस राजनीतिक गठबंधन को वो अपनी ताकत मान रहे थे, वैसे गठबंधन विफल होने के लिए अभिशप्त होते हैं और जो दल या उसका नेतृत्व सियासी तौर पर 'दूरदर्शी' होता है, वो इसका फायदा उठा लेता है जैसा कि इस मामले में एनसीपी के साथ होता दिख रहा है। इसके कई उदाहरण हैं जैसेग 2013 में आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन के बाद से कांग्रेस का दिल्ली से सफाया ही हो गया, 2014 में जम्मू-कश्मीर में बीजेपी-पीडीपी का साहसिक प्रयोग उलटा पड़ गया और मुस्लिम वोट बैंक छिटकने से पीडीपी कमजोर हुई, 2015 में बिहार में नीतीश-लालू 1993 में कांशीराम-मुलायम यादव या फिर उससे भी पहले 1989 में केंद्र में वामपंथी और बीजेपी के बीच हुए बेमेल गठबंधन का हश्र सबने देखा है। अब उद्धव को यह समझ नहीं आया या बीजेपी से खुलकर जंग करने के कारण एनसीपी-कांग्रेस उनकी मजबूरी बन गए थे, इस पर भी उद्धव ही तस्वीर साफ कर सकते हैं।

कीमत भी उद्धव ही चुका रहे हैं। आज शिवसेना के लगभग सभी क्षत्रप शिंदे खेमे में जा चुके हैं। जो ठाकरे परिवार शिवसेना का 'छत्रपति' रहा है, उसका छत्र अब केवल कोंकण के रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग जिले में बचा दिख रहा है। कोंकण के अलावा पश्चिम महाराष्ट्र, विदर्भ और मराठवाड़ा में अब उद्धव के खेमे में गिने-चुने विधायक ही रह गए हैं। मुंबई में भी 13 में से पांच विधायकों ने शिंदे का हाथ थाम कर उद्धव की परेशानी बढ़ा दी है। आखिर शिवसेना में उद्धव से बड़े नेता कैसे बन गए शिंदे? जो काम राज ठाकरे और नारायण राणे जैसे नेता नहीं कर पाए, उसे शिंदे ने कैसे कर दिखाया? दरअसल बाला साहेब की विचारधारा पर पले-बढ़े शिंदे बहुत पहले ही जान गए कि शिवसेना के पैरों तले से जमीन खिसक रही है। पार्टी का कोर वोटर पहले हैरान था, अब नाराज भी हो रहा था। शिंदे जान रहे थे कि सब कुछ ऐसे ही चलता रहा तो मतदाताओं के पास दोबारा वापस जाना असंभव होगा। उद्धव से उलट शिंदे अपनी पार्टी के विधायकों और समर्थकों से लगातार मिलते थे और हिंदुत्व विचारधारा के बारे में खुलकर बोलते थे। विधायकों ही नहीं, शिवसेना कार्यकर्ताओं को भी लगातार अहसास हो रहा था कि जब वे बीजेपी के साथ गठबंधन में थे तो उन्हें अधिक सम्मान मिलता था।

ऐसा लगता है कि अपनी बेहतर राजनीतिक समझ के कारण देवेन्द्र फडणवीस ने शिवसैनिकों की इस मनोदशा को उद्धव से पहले ताड़ लिया। सरकार चलाने का जनादेश मिलने के बावजूद विपक्ष में बैठने की मजबूरी और एक बार सरकार बनाने की कोशिश में नाकाम होने के बावजूद फडणवीस ने उम्मीद नहीं हारी और हर मौके पर गठबंधन सरकार पर निशाना साधा है। फडणवीस कुछ बड़ा करने वाले हैं इसकी भनक राज्य सभा और विधान परिषद चुनाव के नतीजों से समझ आ रही थी। जिस गोपनीय तरीके से शिवसेना के बीसियों विधायक महाराष्ट्र में उद्धव की नाक के नीचे से निकल कर सूरत और गुवाहाटी पहुंचे हैं, उससे साफ है कि यह काम अकेले शिंदे के बूते का नहीं हो सकता। भले ही एक बार की किरकिरी के बाद इस बार छाछ भी फूंक-फूंक कर पी रही बीजेपी अपने पत्ते नहीं खोल रही हो, लेकिन यह तो कोई भी समझ सकता है कि इतना बड़ा 'सियासी ऑपरेशन' देवेन्द्र फडणवीस की भूमिका के बिना संभव नहीं हो सकता था।

बहरहाल, राजनीतिक कुहासे में घिरी महाराष्ट्र की सियासत में एक बात स्पष्ट हो गई है। तीर-कमान शिवसेना का चुनाव चिन्ह है और चुनावी लड़ाई के लिहाज से तीर अब कमान से निकल चुका है। उद्धव ने भले अभी मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया होग लेकिन वो अब विधानसभा में शिवसेना के सर्वमान्य नेता नहीं रह गए हैं। पार्टी पर वो अपना दावा बरकरार रख पाएंगे या नहीं, यह भी अगले कुछ दिनों में साफ हो जाएगा। हालांकि इसके लिए वो पूरा जोर लगा रहे हैंग और जमीनी कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें कर रहे हैं। संवाद की खिड़की खोलने वाला यह सबक उन्होंने पहले ही याद रखा होता तो आज शिवसेना के वजूद पर सबसे बड़ा खतरा ही नहीं मंडरा रहा होता।

विचार मंथन

कोरोना वैक्सीन संजीवनी

सिद्धार्थ शंकर

कोरोना महामारी से बचाव के लिए बनाई गई वैक्सीन भारत के साथ-साथ अन्य देशों के लिए संजीवनी साबित हुई है। इस वैक्सीन ने भारत में जहां 42 लाख से अधिक लोगों की जान बचाई है वहीं पूरी दुनिया में दो करोड़ से अधिक लोगों को मौत के मुंह में जाने से रोका है। लांसेट जर्नल के दिसंबर 2020 से दिसंबर 2021 तक के आंकड़ों में यह बात सामने आई है। शोधकर्ताओं ने कहा कि दुनिया में कोरोना से 3.14 करोड़ मौतों का अनुमान लगाया गया था लेकिन टीकाकरण की वजह 1.98 करोड़ की जान बचाई गई। अध्ययन का अनुमान है कि अगर विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2021 के अंत तक दो या अधिक खुराक के साथ प्रत्येक देश में 40 प्रतिशत आबादी का टीकाकरण करने का लक्ष्य पूरा किया गया होता तो और 5 लाख 99 हजार 300 लोगों की जान बचाई जा सकती थी। अध्ययन के प्रमुख लेखक ओलिवर वाटसन ने कहा कि भारत के लिए, हमारा अनुमान है कि इस अवधि में टीकाकरण से 42 लाख से अधिक मौतों को रोका गया। भारत में कोरोना महामारी के दौरान 51 लाख से अधिक लोगों की मौत का अनुमान लगाया गया था लेकिन कोरोना टीकाकरण की वजह से लाखों लोगों की जान बचाई गईं। कोरोना के प्रति भारतीयों की सावधानी और समय पर वैक्सीन लेना ही रामबाण बना है। भारत महामारी की शुरुआत में पूरी दुनिया की नजरों में था और भयावहता का अंदाजा सभी लगा रहे थे, मगर जिस खूबी से भारत ने महामारी को पस्त किया, वह दूसरों के लिए मिसाल बन गया। आधुनिक चिकित्सा पद्धति का दावा करने वाले अमेरिका और अन्य यूरोपीय देश जब पस्त हो गए तब भारत ने अपने कौशल से महामारी को हराया। कोरोना को हराने में वैक्सीन को नजरअंदाज करना गलती होगी। सरकार के सख्त फैसले भी जीत में बड़ी भूमिका रखते हैं। फैसलों को लागू करने में कोरोना वॉरियर्स का भी रोल अहम है। भारतीयों की नियमों को मानने में दिखाई गई तत्परता भी कम नहीं आंकी जा सकती। इन सब में टीकाकरण अभियान निश्चित ही एक बड़ा और महत्वपूर्ण कदम है। महामारी की भयावहता और दुनियाभर में इसके कहर से इतना तो साफ हो गया था कि जब तक टीका नहीं आ जाता, तब तक बचाव संबंधी उपाय ही जीवन को बचाने में मददगार साबित हो सकते हैं। लॉकडाउन जैसे कदम भी इसीलिए उठाए गए थे, ताकि लोग घरों से न निकलें और संक्रमण का प्रसार न हो। इसलिए टीके को लेकर लंबे समय से इंतजार था। अमेरिका और यूरोप के ज्यादातर देशों की तस्वीर तो डराने वाली रही। भारत में भी संक्रमण से हुई मौतों का आंकड़ा डेढ़ लाख को पार कर चुका है। ऐसे में बिना किसी कारगर टीके के संभव ही नहीं था कि महामारी को शिकस्त दी जा सके। भारत की आबादी को देखते हुए टीकाकरण का काम चुनौती भरा रहा। सबको जल्द ही एक साथ टीका लगा पाना किसी भी सूरत में संभव नहीं था। इसलिए इसके लिए प्राथमिकता तय की गई। टीके के लिए शोध, परीक्षण से लेकर इसके निर्माण और देश में जगह-जगह पहुंचाने का काम भी कोई मामूली नहीं था। तैयार टीकों को सुरक्षित रूप से हर राज्य में भेजने के लिए वायुसेना की सेवाएं ली गईं। टीकाकरण के काम में कहीं कोई चूक न रह जाए, इसके लिए देश भर में कई बार पूर्वाभ्यास किए गए। भारत के वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, स्वास्थ्य कर्मियों और इस महाभियान से जुड़े लोगों ने जिस जीवट के साथ काम किया, उसी का परिणाम है कि साल भर के भीतर ही कुछ गिने-चुने देशों के साथ हम भी टीका बनाने से लेकर उसे लगाने में सफल हो पाए हैं। इसे भी बड़ी कम बड़ी उपलब्धि नहीं माना जाना चाहिए कि भारत में बने टीकों का दुनिया के दूसरे देशों में हम निर्यात करने में भी सक्षम हैं। देश में सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के टीके कोविशील्ड और भारत बायोटेक के टीके कोवैक्सीन के आपात इस्तेमाल को मंजूरी दी गई। हालांकि टीकों को लेकर कुछ विवाद भी खड़े हुए और इस कारण लोगों में भय और अविश्वास भी पैदा हुआ। लेकिन देश के चिकित्सा विशेषज्ञों और महामारी विशेषज्ञों ने टीके कारगर होने का भरोसा दिलाया। यही भरोसा अंत में भारत को जीत दिलाने में कामयाब रहा।

ब्लॉगर

आपातकाल में छिन गई थी देश की स्वतंत्रता

सुरेश हिन्दुस्थानी

सत्ता की ताकत का दुरुपयोग कैसे किया जाता है। इसका उदाहरण कांग्रेस सरकार द्वारा 1975 में देश पर तानाशाही पूर्वक लगाया गया आपातकाल है। जिसमें अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही समाप्त कर दिया था। इसे एक प्रकार से देश की आजादी को छीनने का दुस्साहसिक प्रयास भी माना जा सकता है। क्योंकि इंदिरा शासन द्वारा देश पर थोपे गए आपातकाल में सरकार के विरोध में आवाज उठाने को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया था। यहां तक कि सरकार ने विपक्ष की राजनीति करने वालों के साथ ही उन समाजसेवियों और राष्ट्रीय विचार के प्रति समर्पित उन संस्थाओं के व्यक्तियों को जेल में ठूंस दिया था, जो सरकार की कमियों के विरोध में लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठा रहे थे। सरकार के इस कदम को पूरी तरह से अलोकतांत्रिक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपनी सरकार के खिलाफ उठने वाली हर उस आवाज को दबाने का प्रयास किया, जो लोकतांत्रिक रूप से भी सही थी। वैसे देखा जाए तो कांग्रेस शासन का यही चरित्र रहा है कि उनके खिलाफ उठने वाली आवाज को किसी भी प्रकार से शांत किया जाए। आज भी कांग्रेस ठीक इसी पद्धति से काम करती हुई दिखाई दे रही है। कांग्रेस में लोकतांत्रिक सिद्धांतों की बलि दी जाती रही है।

इसे कांग्रेस का स्वभाव ही माना जा सकता है कि उसने देश को मजबूत करने वाली आवाज को मुखर नहीं होने दिया। इसके विपरीत देश के विरोध में उठने वाली आवाज को बिना सोचे समझे अभिव्यक्ति की आजादी कहकर समर्थन किया। सीधे शब्दों में निरूपित किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस को अपने विरोध में कही गई कोई बात जरा भी पसंद नहीं है। इसी कारण नेशनल हेराल्ड में जब जांच की बात आती है तो कांग्रेस के नेता एकजुट होकर ऐसा प्रदर्शन करते हैं, जैसे वही सही हैं और बाकी सभी गलत। कांग्रेस ने एक नहीं कई बार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर राष्ट्रविरोधी ताकतों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देने काम किया है, लेकिन जो कांग्रेस गाहे-बगाहे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करती रही है, उसने ही 25/26 जून, 1975 की रात आपातकाल लगाने के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पूरी तरह गला घोंट दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर किस प्रकार कुठाराघात किया जाता है, इस तथ्य को जानने के लिए कांग्रेस के नेताओं को आपातकाल के काले अध्याय का अध्ययन करना चाहिए। आपातकाल के नाम पर कांग्रेस ने अंग्रेजों से भी भयंकर यातनाएं देते हुए देशभक्तों पर कहर बरपाया। जिसके स्मरण मात्र से दिल में सिरहन दौड़ जाती है। जिन लोगों ने इस काली रात का साक्षात्कार किया, उनके अनुभव सुनने मात्र से ही लगता है कि इन्होंने आपातकाल को किस कदर भोगा होगा।

आपातकाल लगाने के पीछे के कारणों पर दृष्टिपात किया जाए तो यही तथ्य सामने आते हैं कि उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पूरी तरह से तानाशाह शासक की भूमिका में दिखाई दीं। उन्होंने इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश को ठेंगा बताते हुए अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया, यह एक प्रकार से सत्ता का दुरुपयोग ही था। वह निर्णय क्या था? इसकी जड़ में 1971 में हुआ लोकसभा चुनाव था, जिसमें उन्होंने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी राजनारायण को पराजित किया था, लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राज नारायण ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। 12 जून, 1975 को जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा ने इंदिरा गांधी का चुनाव निरस्त कर उन पर छह साल तक चुनाव न लड़ने का प्रतिबंध लगा दिया और राजनारायण को चुनाव में विजयी घोषित कर दिया था। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया और देश में आपातकाल घोषित कर दिया। हाई कोर्ट के निर्णय के साथ ही गुजरात में चिमनभाई पटेल के विरुद्ध विपक्षी जनता मोर्चे को भारी विजय मिली। इस दोहरी चोट से इंदिरा गांधी बौखला गईं और 25/26 जून की रात आपातकाल लागू करने की घोषणा कर दी गई।

आपातकाल के नाम पर केवल उन्हीं लोगों को जेल में जबरदस्ती बंद किया था, जो सरकार के विरोधी थे। देश भर में इंदिरा शासन के विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन खड़ा किया। आपातकाल में शासन, प्रशासन ने लोकनायक जयप्रकाश के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन में हिस्सा लेने वाले हर उस व्यक्ति को प्रताड़ना दी, जो लोकतांत्रिक तरीके सरकार के विरोध में आवाज उठा रहे थे। विपक्षी राजनेताओं ने देश में केन्द्र सरकार के विरोध में ऐसा वातावरण बनाया कि इंदिरा गांधी को अपना सिंहासन हिलता हुआ दिखाई दिया। जॉर्ज फर्नांडीज को लोहे की जंजीरों से बांधकर यातनाएं दी गईं। देश के जितने भी बड़े नेता थे, सभी के सभी सलाखों के पीछे डाल दिए गए। एक तरह से जेलें राजनीतिक पाठशाला बन गईं। जिन लोगों ने यह दृश्य देखा, उनका यही कहना था कि ऐसा दृश्य तो अंग्रेजों के शासनकाल में भी नहीं दिखा। कहने का आशय यही है कि इंदिरा गांधी ने देश के लोकतंत्र का पूरी तरह से अपहरण कर लिया। इस दौरान जनता के सभी मौलिक अधिकारों को स्थगित कर दिया गया था। सरकार विरोधी भाषणों और किसी भी प्रकार के प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।

आपातकाल के दौरान सत्ताधारी कांग्रेस आम आदमी की आवाज को कुचलने की निरंकुश कोशिश की। इसका आधार वो प्रावधान था जो धारा-352 के तहत सरकार को असीमित अधिकार देती थी। मीसा और डीआईआर के तहत देश में एक लाख से ज्यादा लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया। आपातकाल के खिलाफ आंदोलन के नायक जय प्रकाश नारायण की कैद के दौरान किडनी खराब हो गई थी। कर्नाटक की मशहूर अभिनेत्री डॉ. स्नेहलता रेड्डी जेल से बीमार होकर निकलीं, बाद में उनकी मौत हो गई। उस काले दौर में जेल-यातनाओं की दहला देने वाली कहानियां भरी पड़ी हैं। इसलिए आज कभी-कभी कांग्रेस लोकतंत्र बचाने की बात ऐसे करती है, जैसे लोकतंत्र के मायने केवल कांग्रेस ही समझती है और कोई नहीं जानता। सत्य यह है कि आज स्वयं कांग्रेस के अंदर ही लोकतंत्र नहीं है, केवल परिवार तंत्र है। इसलिए कांग्रेस से लोकतंत्र की उम्मीद करना बेमानी ही कहा जाएगा।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

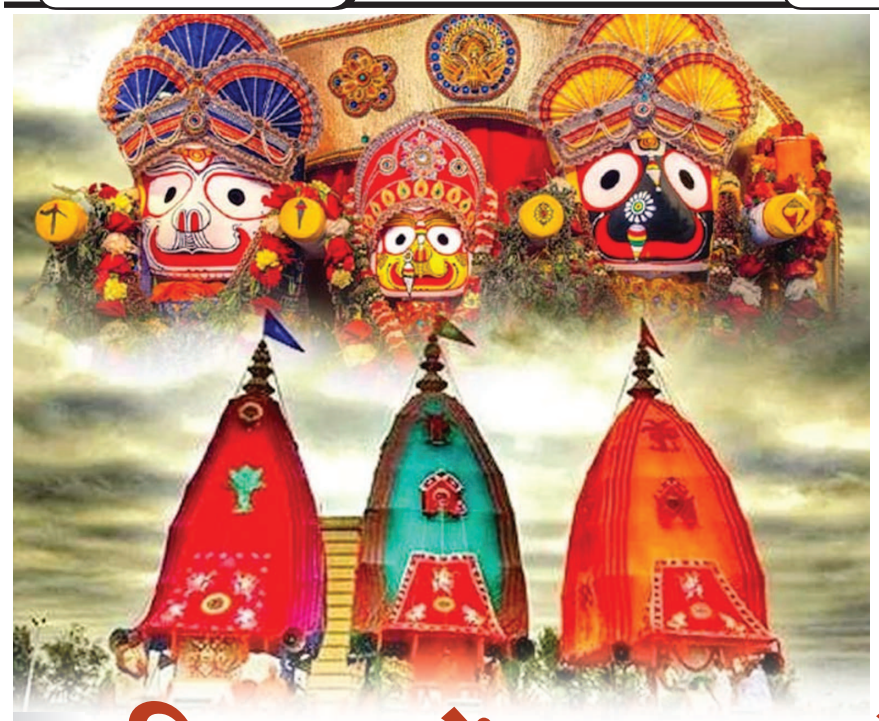

जगन्नाथ रथयात्रा के पहले प्रभु जगन्नाथ को 108 कलशों से शाही स्नान कराया जाता है। फिर 15 दिन तक प्रभु जी को एक विशेष कक्ष में रखा जाता है। जिसे ओसर घर कहते हैं। आखिर उन्होंने क्यों एकांत में 15 दिन के लिए रखा जाता है और उसके बाद ही रथयात्रा प्रारंभ होती है? जानते हैं इस रहस्य को।

आखिर क्यों रथयात्रा से पहले 15 दिन तक एकांतवास में रहते हैं भगवान जगन्नाथ?

कथा के अनुसार प्रभु जगन्नाथ के कई भक्तों में से एक थे माधवदास। बचपन में ही उनके माता पिता शांत हो गए थे तो बड़े भाई के आग्रह पर उन्होंने विवाह कर लिया और अंत में भाई भी उन्हें छोड़कर संन्यासी बन गए तो उन्हें बहुत बुरा लगा। फिर एक दिन पत्नी का अचानक देहांत हो गया तो वे फिर से अकेले रह गए। पत्नी के ही कहने पर वे बाद में जगन्नाथ पुरी में जाकर प्रभु की भक्ति करने लगे।

माधवदास के संबंध में बहुत सारी कहानियां प्रचलित है उन्हीं में से एक कहानी है प्रभु जगन्नाथ के 15 दिन तक बीमार पड़ने की कहानी। प्रभु जगन्नाथ रथयात्रा के 15 दिन पहले बीमार पड़ जाते हैं और 15 दिन तक बीमार रहते हैं।

माधवदासजी जगन्नाथ पुरी में अकेले ही रहते थे। वे अकेले ही बैठे बैठे भजन किया करते थे और अपना सारा काम खुद ही करते थे। प्रभु जगन्नाथ ने उन्हें कई बार दर्शन दिए थे। वे नित्य प्रतिदिन श्री जगन्नाथ प्रभु का दर्शन करते थे और उन्हीं को अपना मित्र मानते थे।

एक बार माधवदास जी को अतिसार (उलटी-दस्त) का रोग हो गया। वह इतने दुर्बल हो गए कि चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया। फिर भी अपना सारा काम खुद किया करते थे।

उनके परिचितों ने कहा कि महाराज हम आपकी सेवा करें तो माधवदासजी ने कहा कि नहीं, मेरा ध्यान रखने वाले तो प्रभु श्रीजगन्नाथजी है। वे कर लेंगे मेरी देखभाल, वही मेरी रक्षा करेंगे।

फिर धीरे धीरे उनकी तबीयत और बिगड़ गई और वे उठने-बैठने में भी असमर्थ हो गए तब भगवान श्रीजगन्नाथ जी स्वयं सेवक बनकर इनके घर पहुंचे और माधवदासजी से कहा कि हम आपकी सेवा करें। उस वक्त माधवदासजी की बेसुध से ही थे। उनका इतना रोग बढ़ गया था की उन्हें पता भी नहीं चलता था कि कब मल-मूत्र त्याग देते थे और वस्त्र गंदे हो जाते थे।

भगवान जगन्नाथ ने उनकी 15 दिन तक खूब सेवा की। उनके गंदे कपड़ों को भी धोया और उन्हें नहलाया भी। जब माधवदास जी को होश आया, तब उन्होंने तुरंत पहचान लिया कि यह तो मेरे प्रभु ही हैं। यह देखकर माधवदासजी ने पूछा, प्रभु आप तो त्रिलोक के स्वामी हैं, आप मेरी सेवा कर रहे हैं। आप चाहते तो मेरा रोग क्षण में ही दूर कर सकते थे। परंतु आपने ऐसा न करके मेरी सेवा क्यों की?

प्रभु श्री जगन्नाथ जी ने कहा- देखो माधव! मुझसे भक्तों का कष्ट नहीं सहा जाता। इसी कारण तुम्हारी सेवा मैंने स्वयं की है। दूसरी बात यह कि जिसका जैसा प्रारब्ध होता है उसे तो वह भोगना ही पड़ता है। मैं नहीं चाहता था कि तुम्हें प्रारब्ध का भोगना न पड़े और फिर से जन्म लेना पड़े। अगर उसको भोगेगे-काटोगे नहीं तो इस जन्म में नहीं तो उसको भोगने के लिए फिर तुम्हें अगला जन्म लेना पड़ेगा। इसीलिए मैंने तुम्हारी सेवा की। परंतु तुम फिर भी कह रहे हो तो अभी तुम्हारे हिस्से के 15 दिन का प्रारब्ध का रोग और बचा है तो अब 15 दिन का रोग मैं ले लेता हूं और अब तुम मुक्त हो। इसके बाद प्रभु जगन्नाथ खुद 15 दिन के लिए बीमार पड़ गए।

इस घटना की स्मृति में तभी से रथयात्रा के पूर्व प्रभु जगन्नाथ बीमार पड़ जाते हैं। तब 15 दिन तक प्रभु जी को एक विशेष कक्ष में रखा जाता है। जिसे ओसर घर कहते हैं। इस 15 दिनों की अवधि में महाप्रभु को मंदिर के प्रमुख सेवकों और वैद्यों के अलावा कोई और नहीं देख सकता। इस दौरान मंदिर में महाप्रभु के प्रतिनिधि अलारनाथ जी की प्रतिमा स्थपित की जाती हैं तथा उनकी पूजा अर्चना की जाती है। 15 दिन बाद भगवान स्वस्थ होकर कक्ष से बाहर निकलते हैं और भक्तों को दर्शन देते हैं। जिसे नव यौवन नैत्र उत्सव भी कहते हैं। इसके बाद द्वितीया के दिन महाप्रभु श्री कृष्ण और बडे भाई बलराम जी तथा बहन सुभद्रा जी के साथ बाहर राजमार्ग पर आते हैं और रथ पर विराजमान होकर नगर भ्रमण पर निकलते हैं।

...तो इसलिए बांधा जाता है कलावा

हिंदू धर्म में किसी भी पूजा-पाठ या फिर यज्ञ, हवन आदि से समय पंडित (पुरोहित) यजमान की दायीं कलाई में कलावा बांधते हैं। कलावा को मौली और रक्षासूत्र के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन क्या कभी आपने ये सोचा है कि इसके पीछे क्या कारण है। अगर आपको लगता है कि इसके पीछे सिर्फ धार्मिक कारण है तो ऐसा नहीं है। जी हां, धार्मिक ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक कारणों से भी मौली बांधी जाती है।

देवी लक्ष्मी ने की कलावा बांधने की शुरुआत

शास्त्रों में ये कहा गया है कि कलावा या मौली बांधने का प्रारंभ माता लक्ष्मी और राजा बलि ने की थी। माना जाता है हाथ पर मौली बांझने से जीवन में आने वाले संकट से रक्षा होती है। कलावा को हमेशा बांधते समय एक मंत्र को बोला जाता है-

येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल:, तेन त्वाम प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल:।

कलावा धारण करने होती है इनकी कृपा

शास्त्रों में कहा गया है कि कलावा बांधने से त्रिदेव यानी ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आशीर्वाद मिलता है। साथ ही लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती तीनों देवियों की अनुकूलता का भी फायदा मिलता है। जानें कलावा धारण करने को लेकर क्या कहता है विज्ञान विज्ञान के मुताबिक, शरीर के ज्यादातर अंगों तक जाने वाली नसें कलाई से होकर गुजरती हैं। वहीं जब कलाई पर मौली या कलावा बांधा जाता है तो इससे नसों की क्रिया नियंत्रित रहती हैं। इससे वात, पित्त और कफ की समानता बनी रहती है। माना ये भी जाता है कि कलावा बांधने से हृदय संबंधी रोग, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और पैरालिसिस जैसे रोगों से काफी सुरक्षा होती है।

इन स्थानों पर मौली बांधने से मिलता है लाभ

मौली को शादी शुदा महिलाओं के बाएं हाथ और पुरुषों एवं अविवाहित कन्याओं के दाएं हाथ में बांधने का विधान है। चाबी के छल्ले, बही-खाता और तिजोरी जैसी जगहों पर पवित्र मौली बांधने से फायदा होता है, ऐसी मान्यताएं कहती हैं।

आर्थिक समस्याओं में कलावा

मान्यता है कि कलावे में देवी या देवता अदृश्य रूप में विराजमान रहते हैं। इसका निर्माण कच्चे सूत से तैयार होता है और यह कई रंगों जैसे पीला, सफेद, लाल या फिर नारंगी रंग से मिलकर बनता है। ऐसा माना जाता है कलाई पर इसे बांधने से आर्थिक समस्या भी दूर होती है।

वैजयंती की माला से करें विष्णु की उपासना

वैजयंती के वृक्ष पर बहुत ही सुंदर फूल उगते हैं। इसके फूल बहुत ही सुगंधित और सुंदर होते हैं। इसके बीजों की माला बनाई जाती है। वैजयंती के फूल भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को बहुत ही प्रिय है। आओ जानते हैं इसके 6 लाभ।

- वैजयंती फूलों का बहुत ही सौभाग्यशाली वृक्ष होता है। इसकी माला पहनने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। इस माला को किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार को गंगाजल या शुद्ध ताजे जल से धोकर धारण करना चाहिए।
- वैजयंती के बीजों की माला से भगवान विष्णु या सूर्यदेव की उपासना करने से ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव खत्म हो जाता है। खासकर शनि का दोष समाप्त हो जाता है। इस माला को धारण करने से देवी लक्ष्मी भी प्रसन्न होती है।
- इसको धारण करने या प्रतिदिन इस माला से अपने ईष्ट का जप करने से नई शक्ति का संचार तथा आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है।
- इस माला को धारण करने से मान सम्मान में वृद्धि होती है। मानसिक शांति प्राप्त होती है जिससे व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में मन लगाकर कार्य करता है।
- मान्यता है कि पुष्य नक्षत्र में वैजयंती के बीजों की माला धारण करना बहुत ही शुभ फलदायक है। यह सभी तरह की मनोकामना पूर्ण करता है।
- वैजयंती माला से 'ऊं नमः भगवते वासुदेवाय' का मन्त्र नित्य जापने से विवाह में आ रही हर प्रकार की बाधा दूर हो जाती है। जप के बाद केले के पेड़ की पूजा करना चाहिए।

वैजयंती माला का महत्व : एक कथा के अनुसार इन्द्र ने अंहकारवश वैजयंतीमाला का अपमान किया था, परिणामस्वरूप महालक्ष्मी उनसे रुष्ट हो गईं और उन्हें दर-दर भटकना पड़ा था। देवराज इन्द्र अपने हाथी ऐरावत पर भ्रमण कर रहे थे। मार्ग में उनकी भेंट महर्षि दुर्वासा से हुई। उन्होंने इन्द्र को अपने गले से पुष्पमाला उतारकर भेंटस्वरूप दे दी। इन्द्र ने अभिमानवश उस पुष्पमाला को ऐरावत के गले में डाल दिया और ऐरावत ने उसे गले से उतारकर अपने पैरों तले रौंद डाला। अपने द्वारा दी हुई भेंट का अपमान देखकर महर्षि दुर्वासा को बहुत क्रोध आया। उन्होंने इन्द्र को लक्ष्मीहीन होने का श्राप दे दिया।

सियार, हंस, कौआ और हाथी सहित भगवान शनि के 9 वाहन बनाते हैं आपका भाग्य

हिन्दू धर्म में शनि एक देवता और नवग्रहों में एक प्रमुख ग्रह माने गए हैं। वे सूर्यदेव और छाया (संवर्णा) के पुत्र हैं। शनिदेव को न्याय का देवता माना जाता है। इस संबंध में मान्यता यह भी हैं कि शनि के प्रकोप से धनवान भी दरिद्र बन जाता है। कई लोग इन्हें कठोर मानते हैं, परंतु ऐसा सही नहीं है क्योंकि शनिदेव का न्याय निष्पक्ष होता है।

ज्योतिष शास्त्र में भी शनिदेव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। शनिदेव के 9 वाहन माने जाते हैं और वे अलग-अलग वाहनों पर सवारी करते हुए उनके स्वरूप के अनुसार अलग-अलग प्रभाव भी देते हैं। अतः ऐसे समय में कुंडली में शनिदेव की स्थिति को देखते हुए उनके प्रकोप से बचने के लिए उनके अलग-अलग स्वरूपों की आराधना करनी चाहिए।

- **सियार**- यदि शनिदेव का वाहन सियार हो तो अशुभ सूचनाएं मिलने की संभावनाएं ज्यादा बढ़ जाती है, अतः ऐसी स्थिति निर्मित हो तो हिम्मत से काम लेना चाहिए। इस दौरान शुभ फल नहीं मिलता है।
- **हंस**- यदि भगवान शनि का वाहन हंस है तो यह ही बहुत शुभ होता है, क्योंकि इसे शनिदेव के सभी वाहनों में सबसे अच्छा वाहन कहा गया है। इस अवधि में आप अपनी बुद्धि औए मेहनत के बल पर अपने भाग्य का पूरा सहयोग ले सकते हैं तथा इस दौरान आर्थिक स्थिति में काफी सुधार भी देखने को मिलता है।
- **कौआ**- शनिदेव का वाहन कौआ यदि हैं तो हमें यह समय शांति और संयम से निकालना चाहिए, क्योंकि यदि शनि की सवारी कौआ हैं तो इस अवधि में घर-परिवार में कलह बढ़ने, ऑफिस में टकराव की स्थिति निर्मित होती है या यह किसी मुद्दे को लेकर कलह का संकेत भी माना जाता है, अतः इस समय किसी भी मसले को आसान बातचीत के जरिये हल करना अच्छा रहता है।
- **हाथी**- शनि का वाहन यदि हाथी हो तो इसे शुभ नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यह आशा के विपरीत फल मिलने का समय होता है, अतः इस स्थिति में साहस और हिम्मत से काम लेना ही उचित रहता है।
- **मोर**- यदि शनिदेव का वाहन मोर हैं, यह शुभ फल देने वाला होता है। इस समय में मेहनत और भाग्य दोनों का अच्छा साथ मिलता है। इतना ही नहीं इस समयावधि के दौरान बड़ी-बड़ी परेशानी का हल समझदारी से पाया जा सकता है।
- **गधा**- जब शनिदेव का वाहन गधा होता है तो इसे शुभ नहीं माना जाता है और यह शुभ फलों में कमी देता है, अतः इस दौरान अधिक प्रयास के द्वारा ही कार्यों में सफलता प्राप्त की जा सकती है।
- **घोड़ा**- यदि शनिदेव का वाहन घोड़ा हैं, तो हमें शुभ फल मिलते हैं, क्योंकि घोड़ा शक्ति का प्रतीक माना जाता है। और इस समय व्यक्ति उर्जा और जोश से भरा होने के कारण इस दौरान समझदारी और संयम से हम शत्रुओं पर सरलता से विजय पा सकते हैं तथा कार्यक्षेत्र में सफलता मिल सकती हैं।
- **सिंह**- शनिदेव का वाहन सिंह हैं तो घोड़े की तरह ही सिंह भी शुभ फल देने वाला माना जाता है। अगर शत्रु परेशान कर रहा है तो इस समय में समझदारी और चतुराई के द्वार हम उसे परास्त कर सकते हैं।
- **भैंसा**- यदि भैंसा शनिदेव का वाहन हो तो इस समयावधि में मिलाजुला फल मिलता है। कहने का मतलब यह हैं कि इस दौरान समझदारी, होशियारी से किया गया कार्य ज्यादा बेहतर साबित होता है। यदि सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी यानी सावधानी से काम नहीं किया तो बुरे फल मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

मुद्रास्फीति बढ़ने से दुनियाभर में अधिक वेतन, मदद की मांग को लेकर प्रदर्शन बढ़े

नई दिल्ली। वाशिंगटन7 खाद्य वस्तुओं और ईंधन की कीमतों में लगातार हो रही बढ़ोतरी के बीच वेतन नहीं बढ़ने से लोगों की जेबों पर भार बहुत बढ़ता जा रहा है। दुनियाभर में इसकी वजह से व्यापक स्तर पर विरोध प्रदर्शन और हड़तालें हो रही हैं।इस हफ्ते पाकिस्तान में विपक्षी दलों, जिम्बॉब्वे में नर्सों, बेल्जियम में कामगारों, ब्रिटेन में रेलवे कर्मचारियों, इक्वाडोर में स्थानीय लोगों, अमेरिका में पायलटों और कुछ यूरोपीय एयरलाइंस के कर्मचारियों ने भी बढ़ती महंगाई के मुद्दे पर प्रदर्शन किए। कई हफ्तों से जारी राजनीतिक अस्थिरता के बाद बुधवार को श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने आखिरकार देश के आर्थिक रूप से धराशायी हो जाने की घोषणा कर दी। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि यूक्रेन में रूस के युद्ध छेड़ने की वजह से ऊर्जा की लागत बढ़ गई है, उर्वरकों, अनाज और खाद्य तेल की कीमतें बढ़ गई हैं। बढ़ती कीमतों के साथ अमीरों और गरीबों के बीच की खाई, असमानता और बढ़ने का खतरा है। गरीबीनिरोध संगठन ऑक्सफेम में असमानता नीति के प्रमुख मैट ग्रेनगर ने कहा, ''अमीरों को तो यह भी नहीं पता होता कि एक पैकेट ब्रेड का दाम कितना होता है। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस ने दुनियाभर में असमानता और बढ़ा दी है। अभी तो और अधिक प्रदर्शन देखने को मिलेंगे।'' दक्षिण कोरिया में ट्रक चालकों की आठ दिन से जारी हड़ताल पिछले हफ्ते खत्म हुई। ईंधन की बढ़ती कीमतों के बीच वे न्यूनतम वेतन गारंटी की मांग कर रहे थे। कुछ महीने पहले स्पैन में भी ट्रक कर्मी हड़ताल पर चले गए थे। अप्रैल में पेरू में ईंधन और खाद्य वस्तुओं की बढ़ती कीमतों को लेकर हो रहे प्रदर्शनों के हिंसक होने के बाद सरकार को कर्फ्यू लगाना पड़ा था।

फ्लिपकार्ट तेलंगाना के किसानों, स्वयं-सहायता समूहों को देगी बाजार पहुंच

हैदराबाद। दिग्गज ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट ने तेलंगाना के कृषि उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और स्वयं-सहायता समूहों (एसएचजी) को बाजार पहुंच देने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।फ्लिपकार्ट ने शनिवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में इसकी जानकारी देते हुए कहा कि तेलंगाना की सोसाइटी फॉर एलिमिनेशन ऑफ रुरल पॉवर्टी (एसईआरपी) के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। राज्य के प्रमुख सचिव (पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास) संदीप कुमार सुल्तानिया और कंपनी की उपाध्यक्ष एवं किराना प्रमुख स्मृति रविचंद्रन के बीच इस एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। इस साझेदारी के जरिये फ्लिपकार्ट तेलंगाना के स्थानीय कृषक समुदायों और स्वयं-सहायता समूहों को अपने प्लेटफॉर्म पर मौजूद 40 करोड़ से अधिक ग्राहकों तक अखिल भारतीय बाजार पहुंच प्रदान करेगी। इस सहयोग के तहत फ्लिपकार्ट स्थानीय किसानों से सीधे उच्च गुणवत्ता वाली दालें, बाजरा, अनाज और मसाले खरीदेगी।

जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर की समय सीमा मार्च 2026 तक बढ़ाई गई

नई दिल्ली। सरकार ने जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर लगाने की समयसीमा करीब चार साल के लिए बढ़ाकर 31 मार्च 2026 तक कर दी है। वित्त मंत्रालय द्वारा अधिसूचित माल एवं सेवा कर (उपकर की अवधि और संग्रह की अवधि) नियम, 2022 के अनुसार एक जुलाई 2022 से 31 मार्च 2026 तक क्षतिपूर्ति उपकर का आरोपण जारी रहेगा। उपकर लगाने की समयसीमा 30 जून को ही समाप्त होने वाली थी लेकिन केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता वाली जीएसटी परिषद ने इसकी समयसीमा को मार्च 2026 तक विस्तार देने का फैसला किया। बीते दो वित्त वर्षों में लिए गए कर्जों के पुनर्भुगतान के लिए इस समयसीमा को बढ़ाने का फैसला किया गया है।

ना सोना और ना ही शेयर बाजार, भारतीय सबसे ज्यादा इस चीज में लगाते हैं पैसा

नई दिल्ली। दुनियाभर मे मंदी का दौर जारी है। भारत हो या अमेरिका हर जगह महंगाई बढ़ती जा रही है और शेयर बाजार में स्टॉक्स के दाम फिसलते जा रहे हैं। भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच चुका है। जिनके पास पूंजी है वे चिंता में हैं कि अपने पैसों को कहां निवेश करें, क्योंकि शेयर बाजार इन दिनों मंदी के दौर से गुजर रहा है। इन मुश्किल हालातों में अक्सर लोग सोना को निवेश के लिए सबसे भरोसेमंद मानते हैं, पर अभी सोने पर भी मंदी छायी हुई है। अगर भारतीयों की बात करें तो सोना यहां हमेशा से ही लोगों के आकर्षण का केंद्र रहा है, पर निवेश के मामले में यह भी तीसरे नंबर पर है। बात का खुलासा इनवेस्टमेंट बैंकर जेफरीज की एक रिपोर्ट में हुआ है। इस रिपोर्ट की मानें तो कुछ भारतीय बैंक सावधि जमा (एफडी) और अन्य जमा योजनाओं में निवेश को भी बेहतर बेहतर मानते हैं पर जिस पर भारतीय सबसे ज्यादा पैसा लगाते हैं उनमें यह भी पहले नंबर पर नहीं है। जेफरीज की रिपोर्ट के अनुसार भारतीयों का पसंदीदा निवेश विकल्प रियल एस्टेट है। मार्च 2022 में भारत के लोगों ने अपनी घरेलू बचत का लगभग आधा हिस्सा रियल एस्टेट संपत्तियों में निवेश किया है। इस रिपोर्ट के मुताबिक बैंक जमा इस मामले में दूसरे नंबर पर है जबकि सोना भारतीय परिवारों के बीच निवेश का तीसरा पसंदीदा विकल्प है।

49.4 प्रतिशत भारतीय परिवारों ने अचल संपत्ति में लगाया पैसा

जेफरीज की रिपोर्ट के अनुसार, मार्च 2022 में भारतीय परिवारों की 10.7 लाख डॉलर की संपत्ति में से तकरीबन 49.4 प्रतिशत अचल संपत्ति संपत्तियों में निवेश किया गया है। वहीं, भारत परिवारों ने अपनी बचत का महज 15 प्रतिशत ही सोने में निवेश किया है। जेफरीज की इस रिपोर्ट में कोरोना संकट का प्रभाव भी साफ तौर पर दिख रहा है। भारतीय परिवारों ने अपनी बचत का लगभग 6.20 प्रतिशत बीमा पर भी खर्च किया है। यह भारतीयों के लिए निवेश के सबसे पसंदीदा विकल्प के मामले में चौथे नंबर पर आता है।

निवेश के मामले में शेयर बाजार छठे नंबर पर -जेफरीज की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में निवेश करने के मामले में भविष्य निधि और पेंशन 5 वें नंबर पर आता है। मार्च 2022 में भारतीय परिवारों की 10.70 ट्रिलियन डॉलर की बचत का 5.70 प्रतिशत भविष्य निधि और पेंशन पर खर्च किया गया है। इसके बाद नंबर आता है शेयर बाजार का। निवेश के मामले में स्टॉक मार्केट छठे नंबर पर है। भारतीय इक्विटी बाजारों में विदेशी संस्थागत निवेशकों एफआईआई की भारी बिकवाली के बावजूद घरेलु संस्थागत निवेशकों डीआईआई का बाजार पर भरोसा बना हुआ है। घरेलू निवेशक अक्टूबर 2021 के बाद स्टॉक मार्केट में नेट बायर यानी शुद्ध खरीदार बने हुए हैं। मार्च 2022 में कुल भारतीय परिवारों की बचत का लगभग 4.80 प्रतिशत शेयर बाजार में निवेश किया गया है।

बदहाली से जूझ रहे श्रीलंका ने उठाया बड़ा कदम, किसी व्यक्ति के 10 हजार डॉलर से अधिक विदेशी मुद्रा रखने पर लगाई पाबंदी

काबुल। विदेशी मुद्रा संकट से जूझ रही श्रीलंका सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने किसी व्यक्ति के अपने पास विदेशी मुद्रा रखने की अधिकतम सीमा को घटना दिया है। अब श्रीलंका में इंडिविजुअल्स अपने पास 10 हजार अमेरिकी डॉलर ही रख सकते हैं। पहले इंडिविजुअल्स के लिए विदेशी मुद्रा रखने की अधिकतम सीमा 15 हजार अमेरिकी डॉलर थी।

आपको बता दें कि भारत का पड़ोसी श्रीलंका अभूतपूर्व आर्थिक संकट से जूझ रहा है। देश को संकट से बाहर निकालने के लिए देश की कमान पूर्व प्रधानमंत्री रनिल विक्रमसिंघे को सौंपी गयी है। फिलहाल नई सरकार के पास ईंधन भुगतान के लिए भी पैसा नहीं हैं। ऐसे में सरकार ने अपने पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार सुनिश्चित करने ताकि जरूरी खाद्य

सामग्री और ईंधन की किल्लत नहीं हो, इसे देखते हुए यह फैसला लिया है।

आपको बता दें कि विदेशी मुद्रा भंडार की कमी के कारण श्रीलंका इस साल अप्रैल में अपने अंतरराष्ट्रीय ऋण चुकाने के मामले में डिफॉल्टर घोषित हो गया था। हाल के दशकों में इस तरह से डिफॉल्टर घोषित होने वाला श्रीलंका एशिया का पहला देश है। श्रीलंका के प्रधानमंत्री रनिल विक्रमसिंघे जो फिलहाल वित्तमंत्री के प्रभार में भी हैं ने फॉरेन एक्सचेंज एक्ट के तहत अधिकतम विदेशी मुद्रा भंडार रखने की सीमा तय करने से जुड़ा आदेश जारी किया है। सरकार की ओर से यह आदेश श्रीलंका के सेंट्रल बैंक के गवर्नर नंदलाल वीरसिंघे के उस बयान के तकरीबन एक महीने से अधिक समय के बाद आया है जिसमें उन्होंने इंडिविजुअल्स के लिए विदेशी मुद्रा रखने की अधिकतम सीमा 15,000 अमेरिकी डॉलर से घटाकर 10,000 डॉलर करने करने की बात कही थी।

आपको बता दें कि श्रीलंका में गंभीर आर्थिक संकट के बीच आम लोगों को रसोई गैस और पेट्रोल-डीजल उपलब्ध करवाने के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार से उसके निर्यात के लिए भारत के क्रेडिट लाइन का उपयोग किया था। अपना क्रेडिट लाइन इस्तेमाल करने देने के लिए श्रीलंका सरकार की ओर से भारत का आभार भी जताया गया है।

टाटा पावर सोलर ने भारत की सबसे बड़ी फ्लोटिंग सौर परियोजना का परिचालन शुरू किया

नई दिल्ली। टाटा समूह की कंपनी टाटा पावर सोलर सिस्टम्स ने कहा कि जल क्षेत्र में बनाई गई भारत की सबसे बड़ी सौर ऊर्जा परियोजना का परिचालन शुरू किया गया है। केरल के कायमकुलम में स्थित इस परियोजना की क्षमता 101.6 मेगावॉट है।कंपनी ने एक बयान में बताया कि यह परियोजना कायमकुलम में 350 एकड़ के जलक्षेत्र में

स्थापित की गई है। उसने कहा कि तरह-तरह की चुनौतियों के बावजूद यह परियोजना निर्धारित समय में पूरी हुई। यह कंपनी टाटा पावर की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी है। टाटा पावर के मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं प्रबंध निदेशक प्रवीर सिन्हा ने कहा, ''भारत की पहली और सबसे बड़ी फ्लोटिंग सौर परियोजना को शुरू करना भारत के टिकाऊ ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक नवोन्मेषी और इस दिशा में बढ़ावा देने वाला कदम है।'' बयान के मुताबिक, इस संयंत्र से पैदा होने वाली सारी ऊर्जा का उपयोग केरल राज्य बिजली बोर्ड करेगा और इस बाबत एक ऊर्जा खरीद समझौता किया गया है।

अमेरिका से गर्भपात करवाने बाहर जाने वालों का खर्चा उठाएंगी कंपनियां, सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद की पहल

वाशिंगटन। अमेरिका में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद गर्भपात के गैरकानूनी घोषित होने के बाद वहां के उद्योग जगत में इस पर चर्चा शुरू हो गई थी। इंडस्ट्री से जुड़े लोगों को चिंता सताने लगी थी कि गर्भपात के बैन होने से वहां का एक बड़ा मानवबल प्रभावित होगा। अब इसके समाधान के लिए वहां की कई दिग्गज कंपनियां आगे आई हैं। देश की कई बड़ी कंपनियों ने अपने महिला कर्मचारियों को आश्वश्त किया है कि अगर वे गर्भपात के लिए अमेरिका के बाहर कहीं और जाती हैं तो इसका खर्चा कंपनी उठाएगी।

आपको बता दें कि शुक्रवार को अमेरिका की सुप्रीम कोर्ट ने रू बनाम वेड मामले में दिया गया फैसला पलट दिया है। कोर्ट के

इस फैसले के बाद से अमेरिका के कम से कम 13 राज्यों में गर्भपात करवाना गैरकानूनी हो गया है। उसके बाद कंपनियों ने यह फैसला लिया है कि अगर उनके कर्मचारी गर्भपात के लिए ऐसी जगहों पर जाते हैं जहां गर्भपात वैध है तो उन्हें आर्थिक सहायता दी जाएगी।

गौरतलब है कि अमेरिका में सुप्रीम कोर्ट ने 50 साल पुराने उस फैसले को बदल दिया है जिसके आधार पर देश में गर्भपात वैध और लोगों के कानूनी अधिकारों में शामिल था। कोर्ट के इस फैसले के बाद यह तय हो गया था कि अमेरिका के ज्यादातर राज्यों में गर्भपात कराना अब वैध नहीं होगा। शुक्रवार की शाम तक ही कम से कम सात राज्यों ने के अधिकारियों ने कहा है कि अब गर्भपात के लिए नए कानूनों को लागू करने का रास्ता साफ हो गया है। कोर्ट के फैसले के बाद जिन कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को गर्भपात के लिए बाहर जाने पर आर्थिक मदद का भरोसा दिया है उनमें माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल, मेटा, येल्प, डिज्नी, ऊबर, नेटफ्लिक्स, बंबल, बॉक्स डॉट कॉम, लैवी स्ट्रॉस, वार्नर ब्रदर्स डिस्कवरी, जेपी मॉर्गन, नाईकी, स्टारबक्स और कॉमकास्ट-एनबीसी यूनीवर्सल जैसी दिग्गज कंपनियां शामिल हैं।

वीएफएस कैपिटल की पोर्टफोलियो 1,500 करोड़ रुपये तक पहुंचाने की योजना

कोलकाता। वीएफएस कैपिटल की अगले कुछ वर्षों में प्रबंधन-अधीन परिसंपत्ति (एयूएम) का आकार 803 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 1,500 करोड़ रुपये तक ले जाने की योजना है और इसके लिए वह देश भर में अपनी शाखाओं की संख्या बढ़ाने जा रही है।वीएफएस कैपिटल के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी कुलदीप मैती ने यहां एक कार्यक्रम में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वीएफएस कैपिटल अब राजस्थान में भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराने जा रही है। उन्होंने कहा कि फिलहाल देश भर में कंपनी की 247 शाखाएं मौजूद हैं और इस वित्त वर्ष के अंत तक 35 नई शाखाएं खोलने की योजना है।कंपनी देश के 13 राज्यों में परिचालन कर रही है। वीएफएस कैपिटल को पहले विलेज फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के नाम से जाना जाता था। मैती ने कहा कि कोविड-19 महामारी के पिछले दो वर्षों में कंपनी ने कारोबार बढ़ाने के बजाय किफायती आवास एवं एमएसएमई क्षेत्र को कर्ज मुहैया कराने पर ध्यान दिया। अब कंपनी अपने विस्तार पर ध्यान दे रही है।

आरबीआई ने सरकारी बैंक आईओबी पर 57.5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक ने सार्वजानिक क्षेत्र के बैंक इंडियन ओवरसीज बैंक पर सख्ती की है। केन्द्रीय बैंक ने इंडियन ओवरसीज बैंक पर 57.5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। आरबीआई की ओर से गया है कि यह कार्रवाई केन्द्रीय बैंक की ओर से तय कुछ मानदंडों और धोखाधड़ी से संबंधित नियमों का अनुपालन नहीं करने के मामले में की गयी है। पीटीआई की एक खबर के मुताबिक आरबीआई की ओर से कहा गया है कि मार्च 2020 के आखिर में अपनी

वित्तीय स्थिति के संदर्भ में बैंक के वैधानिक निरीक्षण और रिपोर्टों की जांच के आधार पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक पर यह कार्रवाई की गयी है।

इंडियन ओवरसीज बैंक ने समय पर नहीं दी थी धोखाधड़ी की जानकारी

रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्रीय बैंक की ओर से जो जानकारी दी गयी है उसमें कहा गया है कि आईओबी पता लगने की तारीख से तीन सप्ताह के भीतर, एटीएम कार्ड क्लोनिंग/स्किमिंग से जुड़े धोखाधड़ी के कुछ मामलों की जानकारी देने में विफल रहा था। यह जुर्माना कमर्शियल बैंकों और चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं की धोखाधड़ी-वर्गीकरण और रिपोर्टिंग पर आरबीआई की ओर से जारी निर्देशों से जुड़ा था। केंद्रीय बैंक की ओर से यह भी कहा गया है कि इस कार्रवाई का ग्राहकों के साथ किए गए किसी भी लेनदेन या करार की वैधता से कोई संबंध नहीं है। इस पेनाल्टी से पहले आरबीआई ने 31 मार्च, 2020 तक इंडियन ओवरसीज बैंक की वित्तीय स्थिति के बारे में सुपरवाइजरी वैल्युएशन के लिए एक निरीक्षण किया था। इसमें रिस्क असेसमेंट रिपोर्ट, इंस्पेक्शन रिपोर्ट और उससे जुड़ी चीजें शामिल थीं।

नेटफ्लिक्स ने अपने 300 कर्मचारियों को दिखा दिया है बाहर का रास्ता

नई दिल्ली। बीते कुछ समय से छंटनी के लिए चर्चा में रही जानी-मानी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स ने एक बार फिर बड़े पैमाने पर छंटनी की है। खबरों के मुताबिक छंटनी के दूसरे दौर में कंपनी ने लगभग 300 कर्मचारियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया है।

मीडिया में चल रही खबरों के मुताबिक कंपनी के लगभग हर डिपार्टमेंट में कर्मियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है। कंपनी के जिन कर्मचारियों को इस छंटनी में अपनी नौकरी गंवानी पड़ी है उनमें ज्यादातर अमेरिका के है। वीडियो स्ट्रीमिंग बाजार की दिग्गज कंपनी नेटफ्लिक्स जिसमें

तकरीबन 11000 स्थायी कर्मचारी हैं, ने अभी कुछ हफ्ते पहले ही मई महीने में अपने यहां छंटनी के पहले दौर में लगभग इतने की कर्मियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया था। मई में कंपनी ने अपने 150 कर्मचारियों और अनुबंध पर काम कर रहे दर्जनों कर्मियों और पार्ट टाइम वर्कर्स की छुट्टी कर दी थी। उस समय नेटफ्लिक्स ने अपने ऑरिजिनल सीरिज वर्टिकल के टॉप क्रियेटिव प्रोफेशनल्स सेबेस्टियन गिब्स और नेगिन सलमासी को नौकरी से निकाल दिया था। कंपनी की ओर से पहले दौर की छंटनी के दौरान ही यह कहा गया था कि इस साल और भी छंटनियां हो सकती हैं।

आपको बता दें कि कंपनी अपने कर्मियों की छंटनी का फैसला स्टॉक मार्केट में कंपनी के कमजोर होते स्टॉक प्राइस को स्थिर बनाने की कवायद के तहत किया है। आपको बता दें कि साल 2022 के पहले क्वार्टर में 2 लाख सब्सक्राइबर्स के नुकसान के बाद कंपनी के शेयरों की कीमत में 20 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई थी। आईएएनएस की कि एक रिपोर्ट के मुताबिक बाजार के विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2022 में अप्रैल से जून के दूसरे क्वार्टर में कंपनी को 20 लाख सब्सक्राइबर्स का नुकसान उठाना पड़ सकता है। आंकड़ों के मुताबिक कंपनी के पास कुल 38 मिलियन से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स हैं।

मासिक टैक्स भुगतान फॉर्म में हो सकता है बदलाव, फर्जी बिलों पर लगेगी रोक

नई दिल्ली। जीएसटी परिषद मासिक टैक्स भुगतान फॉर्म जीएसटीआर-3बी में बदलाव पर विचार कर सकती है। इसमें बिक्री रिटर्न से संबंधित आपूर्ति के आंकड़े और कर भुगतान का एक कॉलम शामिल होगा, जिसमें बाद में कोई बदलाव नहीं किया जा सकेगा। परिषद की अगली बैठक 28-29 जून को चंडीगढ़ में होगी।

जीएसटीआर-3बी फॉर्म में बदलाव से से नकली बिलों पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी। विक्रेताओं द्वारा जीएसटीआर-1 में कई बार ज्यादा बिक्री दिखाई जाती है और इसके आधार पर सामान खरीदार इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) का दावा करता है। जबकि जीएसटीआर-3 बी में कम बिक्री दिखाई जाती है ताकि जीएसटी कम देना पड़े। अभी के जीएसटीआर-3 बी में इनपुट टैक्स क्रेडिट का विवरण खुद तैयार होता है। अधिकारियों के मुताबिक, इस बदलाव से जीएसटीआर-3 बी में उपयोगकर्ता की ओर से कम जानकारी देनी होगी और फाइलिंग की प्रक्रिया भी

आसान होगी।

एएमआरजी के एसोसिएट भागीदार रजत मोहन ने बताया कि इस बैठक में यात्री परिवहन सेवाएं, आवास सेवाएं, हाउस कीपिंग और क्लाउड किचन सेवा देने वाले ई-कॉमर्स ऑपरेटर के लिए टैक्स फाइलिंग में बदलाव हो सकता है। ये कंपनियां अब अलग-अलग कॉलम में अपने जीएसटीआर-1 और जीएसटीआर-3 बी में आपूर्तिकर्ताओं की ओर से जानकारी देने के लिए जवाबदेह होंगी। इसमें उबर, स्विगी और जोमैटो जैसी कंपनियां भी दायरे में आएंगी।

स्पष्टीकरण देगी काउंसिल

इसी के साथ काउंसिल कुछ मामलों में स्पष्टीकरण भी दे सकती है। इसमें सोविनियर्स में दिए गए विज्ञापन पर जीएसटी 5 फीसदी लगेगा या 18 फीसदी, इस पर भी स्पष्टीकरण आएगा। प्रिंट मीडिया में विज्ञापन पर 5 फीसदी जीएसटी लागू है और इसी आधार पर सोविनियर्स पर भी 5 फीसदी टैक्स लगाया जा सकता है।

रणजी ट्रॉफी 2022 : पहली बार रणजी का बादशाह बना 'मध्य प्रदेश'

मुंबई को 6 विकेट से हराकर उठाई ट्रॉफी

दाबुला (एजेंसी)।

बेंगलुरू। मध्य प्रदेश ने रविवार को पांचवें और अंतिम दिन घरेलू क्रिकेट की दिग्गज टीम मुंबई को एकतरफा फाइनल में छह विकेट से हराकर पहली बार रणजी ट्रॉफी खिताब जीतकर इतिहास रचा। कोच चंद्रकांत पंडित ने इसी मैदान पर 23 साल पहले रणजी ट्रॉफी का खिताबी मुकाबला गंवाया था लेकिन इस बार वह चैंपियन टीम का हिस्सा बनने में सफल रहे। अंतिम दिन मुंबई की टीम दूसरी पारी में 269 रन पर सिमट गई जिससे मध्य प्रदेश को 108 रन का लक्ष्य मिला जिसे टीम ने चार विकेट गंवाकर हासिल कर लिया। सत्र में 1000 रन बनाने से सिर्फ 18 रन दूर रहे सरफराज खान (45) और युवा सुवेद पार्कर (51) ने मुंबई को हार से बचाने का प्रयास किया लेकिन कुमार कार्तिकेय (98 रन पर चार विकेट) की अगुआई में गेंदबाजों ने मध्य प्रदेश की जीत सुनिश्चित की। कोच के रूप में पंडित का यह रिकॉर्ड छठा राष्ट्रीय खिताब है।

लक्ष्य का पीछा करते हुए मध्य प्रदेश ने हिमांशु मंत्री (37), शुभमन शर्मा (30) और रजत पाटीदार (नाबाद 30) की पारियों की बदौलत 29.5 ओवर में चार विकेट पर 108 रन बनाकर जीत दर्ज की। इस जीत से पंडित की पुरानी यादें ताजा हो गई जब 1999 में इसी चिन्नास्वामी स्टेडियम में उनकी अगुआई वाली मध्य प्रदेश की टीम ने पहली पारी में बढ़त के बावजूद फाइनल गंवा दिया था और पंडित के करियर का अंत निराशा के साथ हुआ। पंडित के मार्गदर्शन में विदर्भ ने भी चार ट्रॉफी (लगातार दो रणजी और ईरानी कप खिताब) जीती जबकि उसके पास कोई सुपरस्टार नहीं थे।

रजत पाटीदार को छोड़कर यश दुबे, हिमांशु मंत्री, शुभम शर्मा, गौरव यादव या सारांश जैन जैसे खिलाड़ी भारतीय टीम में जगह बनाने की अभी दावेदार नहीं मौजूदा सत्र में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इन सभी ने मिलकर 41 बार के चैंपियन मुंबई को एक और रणजी खिताब से महरूम किया। मध्य प्रदेश ने एक बार फिर साबित किया कि रणजी ट्रॉफी खिताब जीतने लिए आपकी टीम में सुपर स्टार या भारतीय टीम में जगह बनाने के दावेदार होना जरूरी नहीं है। राजस्थान ने उस समय खिताब जीता जबकि ऋषिकेश कानिटकर और आकाश चोपड़ा उसके साथ थे। विदर्भ ने जब खिताब जीते तो उसके युवा खिलाड़ियों के मार्गदर्शन के लिए वसीम जाफर और गणेश सतीश मौजूद थे। मध्य प्रदेश की टीम अपने दो महत्वपूर्ण खिलाड़ियों आवेश खान और वेंकटेश अय्यर के बिना खेल रही थी लेकिन मुंबई पर भारी पर पड़ी। वर्ष 2010 के बाद से रणजी ट्रॉफी में कुछ सत्र कर्नाटक का दबदबा रहा लेकिन इसके बाद सिर्फ मुंबई ही एक खिताब जीत पाई जबकि अधिकांश खिताब राजस्थान (दो), विदर्भ (दो), सौराष्ट्र (एक) और मध्य प्रदेश (एक) जैसी टीम ने जीते जिन्हें घरेलू क्रिकेट में कमजोर माना जाता था। यह दर्शाता है कि मुंबई के शिवाजी पार्क, आजाद मैदान या क्रॉस मैदान, दिल्ली और बेंगलुरू या कोलकाता से क्रिकेट अब छोटे शहरों में भी फैल रहा है।

डायमंड लीग में जीत की लय बरकरार रखना चाहेंगे नीरज

नई दिल्ली (एजेंसी)।

भारत के ओलंपिक स्वर्ण विजेता भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को स्टॉकहोम में इस महीने के अंत में शुरु हो रही डायमंड लीग स्पर्धा में कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। इस टूर्नामेंट से ही उन्हें अगले महीने अमेरिका के यूजीन में होने वाली विश्व चैंपियनशिप की तैयारियों की जानकारी मिलेगी। नीरज ने हाल ही में ग्रेनाडा के विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स को दो बार हराया है। ऐसे में वह अपनी इस जीत के सिलसिले को बनाये रखना चाहेंगे।

नीरज ने फिनलैंड के तुर्कू में पावो नूरमी खेलों में 89.30 मीटर के राष्ट्रीय रिकॉर्ड थ्रो के साथ सत्र की अपनी पहली प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया था। नीरज ने कुओर्टेन खेलों में 86.64 मीटर का थ्रो कर स्वर्ण जीता था। स्टॉकहोम में पीटर्स भी उतरेंगे पर दोहा डायमंड लीग में 93.07 मीटर के शानदार प्रयास के साथ सत्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला यह खिलाड़ी लय में नहीं है। उन्होंने बुधवार को फिनलैंड के ओरिमत्तिला में एक स्पर्धा में अपने सभी थ्रो पूरे नहीं किए। यहां उनका सर्वश्रेष्ठ प्रयास केवल 71.94 मीटर का था। उन्होंने पावो नूरमी खेलों में 86.60 मीटर और कुओर्टाने खेलों में 84.75 मीटर भाला फेंका और दोनों जगह ही उन्हें तीसरा स्थान मिला।

विश्व कप में पोडियम स्थान हासिल करने के प्रयास में लगी भारतीय हॉकी टीम:सविता

नई दिल्ली (एजेंसी)।

भारतीय महिला हॉकी टीम आजकल आगामी विश्व कप में ऐतिहासिक पोडियम स्थान हासिल करने के प्रयासों में लगी हुई है। इसके लिए उसका लक्ष्य नीदरलैंड और स्पेन की संयुक्त रूप से मेजबानी में होने वाले एफआईएच के इस शीर्ष टूर्नामेंट में बेहतर प्रदर्शन करना है। यह टूर्नामेंट एक से 17 जुलाई तक खेला जाएगा। टीम की कप्तान सविता को लगता है कि राष्ट्रीय महिला हॉकी टीम आगामी विश्व कप में पोडियम स्थान हासिल करने में सफल रहेगी।

भारतीय महिला हॉकी टीम पिछले साल ओलंपिक में ऐतिहासिक चौथे स्थान पर रही थी और सविता ने कहा कि टोक्यो ओलंपिक के बाद टीम के अंदर ऐसा माहौल बना है कि अब वह बड़े टूर्नामेंट में किसी भी टीम का मुकाबला करने में सक्षम बन गयी है। उन्होंने कहा, 'ओलंपिक के बाद हमने अपना ध्यान अपने प्रदर्शन को अगले स्तर तक ले जाने में लगाया। हमने अपनी शक्ति एफआईएच प्रो लीग में अच्छा करने पर लगायी और इस प्रतिष्ठित लीग में तीसरा स्थान हासिल किया जिससे विश्व कप से पहले हमारा आत्मविश्वास बढ़ेगा।% भारत का विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन चौथा स्थान रहा है जो उसने 1974 के शुरूआती चरण में हासिल किया था। वहीं 2018 में भारत आठवें स्थान पर रहा था।

अभ्यास मैच में कोहली, जडेजा और अय्यर ने जड़े अर्धशतक

लीसेस्टर (एजेंसी)।

लंबे समय से लय की तलाश कर रहे पूर्व कप्तान विराट कोहली ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच से पहले लीसेस्टरशर के खिलाफ अभ्यास मैच के तीसरे दिन और आखिरी दिन शनिवार में 67 रन की आकर्षक पारी खेली।

दिन की शुरुआत एक विकेट पर 80 रन से करने के बाद भारत ने खेल खत्म होने तक 92 ओवर में सात विकेट पर 364 रन बनाये। भारतीय टीम ने पहली पारी आठ विकेट पर 246 रन पर घोषित की थी जिसके जवाब में लीसेस्टशर ने 244 रन बनाये थे। जसप्रीत बुमराह की गेंद पर कैच आउट होने से पहले कोहली ने 98 गेंद की पारी में पांच चौके और दो छक्के जड़े। कोहली के अलावा हरफमौला जडेजा (56) और मध्यक्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर (62) ने अर्धशतकों के साथ बल्लेबाजी अभ्यास किया। इन दोनों बल्लेबाजों ने हालांकि आउट होने के बाद दोबारा बल्लेबाजी की।

पहली पारी में लीसेस्टरशर के लिए बल्लेबाजी करने वाले टेस्ट विशेषज्ञ चेतेश्वर पुजारा ने 53 गेंद की पारी में 22 बनाये तो वही श्रीकर भरत (43) हनुमा विहारी (20) और शारदुल ठाकुर (28) को भी बल्लेबाजी में अच्छा अभ्यास मिला। लीसेस्टरशर के लिए खेल रहे गेंदबाजों में नवदीप सैनी ने तीन विकेट लिये तो वही जसप्रीत बुमराह, साइ किशोर ने एक-एक विकेट लिये। कमलेश नागरकोटी को दो सफलता मिली।

काइल मायर्स के बल्ले से निकला शतक, वेस्टइंडीज को बांगलादेश पर मिली बढ़त

ग्रॉस आइलेट (सेंट लूसिया)। काइल मायर्स के नाबाद शतक से वेस्टइंडीज ने बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन यहां 106 रन की बढ़त हासिल कर ली।

मायर्स ने 180 गेंद में 15 चौकों और दो छक्कों की मदद से नाबाद 126 रन बनाए जिससे वेस्टइंडीज ने दूसरे दिन का खेल खत्म होने तक पहली पारी में 5 विकेट पर 340 रन बनाए। बांग्लादेश की टीम पहली पारी में 234 रन पर सिमट गई थी। स्टंप के समय जोशुआ डासिल्वा 26 रन बनाकर मायर्स का साथ निभा रहे थे। दोनों छठे विकेट के लिए 92 रन की अटूट साझेदारी कर चुके हैं। वेस्टइंडीज ने दिन का शुरुआत बिना विकेट खोए 67 रन से की। कप्तान क्रेग ब्रथवेट (51) और जॉन कैंपबेल (45) ने पहले विकेट की साझेदारी को 100 रन तक पहुंचाया जिसके बाद शरीफुल इस्लाम ने कैंपबेल को विकेटकीपर नुरूल हसन के हाथों कैच कराके इस साझेदारी को तोड़ा।

फिक्सिंग कांड में बर्बाद हो गया बेहतरीन गेंदबाज मोहम्मद आसिफ का भविष्य: वसीम अकरम

मुंबई । क्रिकेट जगत में पाकिस्तान ने कई बेहतरीन खिलाड़ी दिए, जिन्होंने बड़े रिकॉर्ड बनाए लेकिन कई ऐसे भी थे जो टैलेंट होने के बावजूद एक गलती के कारण अपना करियर बर्बाद कर बैठे। क्रिकेट फिक्सिंग की अगर बात की जाए,तब पाकिस्तान के कई क्रिकेटर इसकी लपेटे में आ चुके हैं। 2010 में फिक्सिंग कांड में पाकिस्तान क्रिकेट के दो प्रमुख तेज गेंदबाजों मोहम्मद आसिफ और मोहम्मद आमिर का पत्न हो गया। आसिफ का करियर ही समाप्त हो गया था। अब आसिफ पर पाकिस्तान के पूर्व कप्तान वसीम अकरम ने कहा कि आसिफ ने अपनी प्रतिभा को बर्बाद कर लिया। अकरम ने कहा, हां, सभी ने मोहम्मद आसिफ की तारीफ की थी। यहां प्रतिभा बर्बाद हो गई, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन मैंने जिससे भी बात की, सभी ने कहा कि उन्होंने दशकों बाद ऐसा गेंदबाज देखा था। जिस तरह से उसने गेंद को नियंत्रित किया, जिस तरह से वह गेंद को दोनों तरफ से स्विंग कराने में कामयाब रहा, यह उसके लिए और पाकिस्तान के लिए भी बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। अकरम ने कहा, वह लंबे समय से मोहम्मद आसिफ से नहीं मिले थे और अगर वह उनसे मिल भी गए, तब वे अब उस पर नाराज नहीं होंगे। मैंने उसे कई सालों से नहीं देखा है। मैं कराची में 10 साल से रह रहा हूं, मैं शायद ही कभी लाहौर जाता हूं। वह एक बच्चा था।

भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा हुए कोरोना पॉजिटिव, बर्मिंघम में टेस्ट मैच की कौन करेगा कप्तानी?

नई दिल्ली (एजेंसी)।

एजबेस्टन में इंग्लैंड के खिलाफ एक जुलाई से आखिरी टेस्ट मैच खेला जाने वाला है, लेकिन उससे पहले ही भारतीय क्रिकेट टीम के लिए एक बुरी खबर आयी है। जानकारी के अनुसार भारतीय टीम के कप्तान कोरोना से संक्रमित हो गये हैं। शनिवार (25 जून) को आयोजित रैपिड एंटीजन टेस्ट (आरएटी) के परिणाम के अनुसार रोहित शर्मा ने कोविड -19 के लिए सकारात्मक परीक्षण किया है। बीसीसीआई की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारतीय कप्तान को आइसोलेशन में रखा गया है और संक्रमण की गंभीरता की पुष्टि और पता लगाने के लिए रविवार को एक आरटी-पीसीआर परीक्षण निर्धारित किया गया है।

कौन करेगा टेस्ट मैच की कप्तानी

1 जुलाई से शुरू होने वाले एजबेस्टन में इंग्लैंड के खिलाफ पुनर्निर्धारित टेस्ट में जगह बनाने के लिए अब उन्हें अब वक्त लग सकता है। रोहत शर्मा से पहले टीम के स्टार बल्लेबाज केएल राहुल भी चोट के कारण टीम में शामिल नहीं है। इससे टीम के मनोबल पर भी काफी असर पड़ेगा। टेस्ट मैच 1 जुलाई से बर्मिंघम में शुरू होने वाला है और अगर रोहित छह दिनों के क्वारंटाइन में रहते है तो टेस्ट की कप्तानी की कमान तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह या विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को मिल सकती है।

सोशल मीडिया पर जौर-शौर से विराट कोहली का नाम ट्रेंड हो रहा है। विराट के फैंस चाहते हैं कि टेस्ट के दौरान अगर रोहित शर्मा टीम की कप्तानी नहीं करत हैं तो विराट कोहली को टीम की कमान दी जाए। ट्विटर पर स1द्वह्लड्डह्लद्मश्चद्धद्यद्ब ट्रेंड कर रहा हैं।

रोहित शर्मा कोरोना पॉजिटिव

बीसीसीआई सचिव जय शाह ने एक मीडिया विज्ञप्ति में कहा, 'टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने शनिवार को किए गए रैपिड एंटीजन टेस्ट (आरएटी) के बाद सीओवीआईडी -19 के लिए सकारात्मक परीक्षण किया है। वह इस समय टीम होटल में आइसोलेशन में है और बीसीसीआई की मेडिकल टीम की देखरेख में है। उसकी सीटी वैल्यू का पता लगाने के लिए रविवार को आरटी-पीसीआर टेस्ट किया जाएगा।

रोहित ने लीसेस्टरशायर के खिलाफ चल रहे अभ्यास मैच के पहले दिन बल्लेबाजी की थी लेकिन दूसरे दिन वह मैदान पर नहीं उतरे। उन्होंने दूसरी भारतीय पारी में बल्लेबाजी नहीं की। 35 वर्षीय भारतीय कप्तान से टेस्ट मैच में शुभमन गिल के साथ पारी की शुरुआत करने की उम्मीद है और उनकी भागीदारी अब उनके आरटी-पीसीआर परीक्षण और रिकवरी के परिणाम पर निर्भर करेगी। ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन भी देर से इंग्लैंड में टीम में शामिल हुए थे क्योंकि उन्होंने यूके दौरे के लिए टीम के रवाना होने से पहले सीओवीआईडी -19 के लिए भी सकारात्मक परीक्षण किया था।

शतरंज ओलंपियाड में भाग नहीं लेंगे चीनी खिलाड़ी

चेन्नई । चीन अगले माह मामल्लापुरम में 28 जुलाई में होने वाले 44वें शतरंज ओलंपियाड में भाग नहीं लेगा। चीन के नंबर एक खिलाड़ी डिंग लिरेन ने कहा है कि चीन की टीम के इस ओलंपियाड में खेलने की कोई संभावनाएं नहीं हैं। मैड्रिड टूर्नामेंट में खेल रहे लिरेन ने कहा, ''नहीं, मुझे लगता है कि चीन की टीम और उसका कोई भी खिलाड़ी इस टूर्नामेंट में खेलेगा हालांकि उसने इसके पीछे के कारणों को नहीं बताया।'' वहीं आयोजकों के अनुसार चीन के खिलाड़ियों ने इस टूर्नामेंट में भाग नहीं लेने का अब तक कोई कारण नहीं बताया है। अभी तक जो संकेत मिले हैं उससे लगाता है कि चीनी टीम नहीं आयेगी।

अदिति का महिला पीजीए चैम्पियनशिप में अच्छा प्रदर्शन

-लाहिड़ी ट्रैवलर्स चैम्पियनशिप में कट हासिल नहीं कर पाये

बेथेस्डा। भारतीय महिला गोल्फर अदिति अशोक ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए महिला पीजीए चैम्पियनशिप के कट में जगह बनाई है। अदिति ने अंतिम तीन होल में दो बर्डी लगाकर एक अंडर 71 का कार्ड खेला। वहीं इससे पहले अदिति ने पहले दौर में 76 का कार्ड खेला था और वह 15 होल के बाद एक ओवर पर चल रही थी जिससे उनके कट हासिल करने की संभावना कम हो गयी थी।

पर इसके बाद इस भारतीय खिलाड़ी ने अंतिम तीन होल में दो बर्डी लगाने लगाकर टूर्नामेंट में अपना स्थान बरकरार रखा। तीन ओवर से वह संयुक्त 54वें स्थान पर थीं। इस दौरान 72 खिलाडियों ने कट हासिल किया था। वहीं पुरुष वर्ग में भारत के ही अनिर्बान लाहिड़ी ट्रैवलर्स चैम्पियनशिप के दूसरे दौर में दो बोगी के कारण कट हासिल नहीं कर पाये। लाहिड़ी ने तीन ओवर 73 के कार्ड में चार बर्डी, तीन बोगी और दो डबल बोगी की। इससे 36 होल में उनका कुल स्कोर तीन ओवर का रहा जिससे वह पांच शॉट से कट हासिल नहीं कर पाये। लाहिड़ी इस प्रकार लगातार तीसरे टूर्नामेंट में कट में जगह नहीं बना सके। इससे पहले वह अमेरिकी पीजीए चैम्पियनशिप और मेमोरियल में भी कट हासिल नहीं कर पाये थे।

फीडे कैंडीडेट्स शतरंज - नेपोमिन्सी और फबियानों फिर जीते

मेड्रिड ,स्पेन । फीडे कैंडीडेट 2022 का अब आधा चरण पूरा हो गया है और कुल 14 मे से 7 राउंड के बाद ऐसा लग रहा है की रूस के यान नेपोमिन्सी और यूएसए के फबियानों कारुआना के बीच एक अलग ही दौड़ चल रही है और फिलहाल यह साफ लग रहा है की खिताब इन दोनों मे से कोई एक ही जीतेगा । सातवे राउंड में यान नेपोमिन्सी नें हंगरी के रिचर्ड रापोर्ट की चुनौती को ध्वस्त करते हुए प्रतियोगिता में अपनी चौंथी जीत दर्ज की तो फबियानों कारुआना नें अजरबैजान के तैमूर रद्जाबोव को मात देते हुए अपनी तीसरी जीत हासिल की । काले मोहरो से नेपोमिन्सी नें पेट्रोफ डिफेंस में 42 चालों में तो कारूआना नें सफ़ेद मोहरो से सिसलियन ओपनिंग में 56 चालों में बाजी अपने नाम की ।

कप्तानी का आनंद लेते हैं हार्दिक, कहा जिम्मेदारी आने पर सर्वश्रेष्ठ करते हैं

मालाहाइड (आयरलैंड) (एजेंसी)।

इंडियन प्रीमियर लीग में पदार्पण सत्र में गुजरात टाइटन्स को खिताब दिलाने वाले हार्दिक पंड्या ने स्वीकार किया कि जिम्मेदारी आने से वह क्रिकेट के मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। हार्दिक को रविवार से यहां आयरलैंड के खिलाफ शुरू हो रही दो मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिये भारतीय टीम का कप्तान चुना गया है।

इस आल राउंडर ने पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच की पूर्व संध्या पर आयोजित वर्चुअल प्रेस कांफ्रेंस में कहा, ''पहले भी मुझे जिम्मेदारी लेने में मजा आता था और अब भी ऐसा ही है लेकिन अब थोड़ी ज्यादा जिम्मेदारी आ गयी है। मेरा हमेशा मानना है कि मैंने जिम्मेदारी लेने के बाद बेहतर किया है। ''

हार्दिक ने कहा, ''अगर मैं अपनी चीजों की जिम्मेदारी लेता हूं और अपने फैसले करता हूं तो वे मजबूत होते हैं। क्रिकेट इस तरह का खेल है जिसमें अलग अलग परिस्थितियों के दौरान मजबूत बने रहना बहुत अहम है। '' उन्होंने कहा, ''मुझे हमेशा जब भी जिम्मेदारी दी गयी तो मैंने इसे संभाला इसलिये ही मैं बेहतर बना। कप्तानी करते हुए मैं देखूंगा कि में प्रत्येक खिलाड़ी को यही जिम्मेदारी कैसे दे सकता हूं। ''

दो करिश्माई कप्तान महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली के नेतृत्व में खेलने से हार्दिक ने अगुआई करने की काबिलियत सीखी लेकिन उनका कहना है कि हर कप्तान का अपना तरीका होता है।

उन्होंने कहा, ''निश्चित रूप से, मैंने उनसे (धोनी और कोहली) काफी चीजें सीखी हैं लेकिन साथ ही मेरे खुद के फैसले भी होते हैं, निश्चित रूप से मेरी खेल की समझ अलग है लेकिन मैंने उनसे काफी अच्छी चीजें सीखी हैं। ''

उन्होंने कहा, ''मैं सहज प्रवृत्ति का नहीं हूं लेकिन अंदर से फैसला करने के बजाय परिस्थितियों को देखता हूं। किस समय पर टीम को किस फैसले की जरूरत है, मैं इस पर ध्यान लगाता हूं, अंदर से मुझे कैसा महसूस हो रहा है, इसे नहीं देखता। ''

उन्होंने कहा, ''मुझे भारत की अगुआई की जिम्मेदारी दी गयी है। यह अपने आप में बड़ी चीज है। मैं खेल किसी को कुछ दिखाने के लिये नहीं खेलता। मैं हमेशा ऐसा ही था। ''

भारतीय टीम आयरलैंड के खिलाफ श्रृंखला में अपने रिजर्व खिलाड़ियों को उतार रही है और हार्दिक ने कहा कि टीम के पास जो 'बेंच स्ट्रेंथ' है वो देश में खेल के लिये अच्छा संकेत है।

उन्होंने कहा, ''अगर ऐसी स्थिति आती है कि हमें दो टीमें भेजनी पड़ें तो हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास उतनी 'बेंच स्ट्रेंथ' है जहां हम खिलाड़ियों को भेज सकते हैं और इससे काफी लोगों को मौके मिलेंगे। '' हार्दिक ने कहा, ''भारत में इतनी प्रतिभा है कि लोगों को मौके ही नहीं मिलते। भारत के लिये खेलना हमेशा एक सपना होता है और उनके लिये यह सपना साकार करना सचमुच शानादर होगा। ''

उन्होंने कहा, ''जिस तरह से प्रतिभायें सामने आ रही हैं और खिलाड़ियों ने जिस तरह का जज्बा दिखाया है, जिस तरह का प्रदर्शन किया है, यह भारत की 'बेंच स्ट्रेंथ' दर्शाता है। भारतीय टीम में इस समय काफी विकल्प हैं। चार लोग अब भी टीम में जगह बनाने के लिये मशक्कत कर रहे हैं। वे दरवाजा खटखटा रहे हैं तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता। ''

उन्होंने कहा कि वे इस संक्षिप्त श्रृंखला को उसी तरह खेलेंगे जैसे वे बड़े टूर्नामेंट में खेलते हैं। उन्होंने कहा, ''यह मानसिक रूप से चुनौती है, यह कहना आसान है कि हम आयरलैंड के खिलाफ खेल रहे हैं लेकिन भारत के लिये खेलना सबसे बड़े गर्व की बात है। अगर हम विश्व कप जीतना चाहते हैं तो यहां से प्रत्येक मैच हमारे लिये महत्वपूर्ण होगा। पहली चीज, यह मायने नहीं रखता कि हम किससे खेल रहे हैं, बस हमें अपनी चीजों पर ध्यान लगाये रखना है।

सरकार देश में एक नागरिक अनुकूल और प्रभावी आपराधिक न्याय प्रणाली प्रदान करने के प्रति कटिबद्ध : अमित शाह

नर्मदा ।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में आज गुजरात के केवड़िया में 'न्यायालयिक विज्ञान क्षमताएं: समयबद्ध और वैज्ञानिक जांच के लिए सुदृढ़ीकरण' विषय पर गृह मंत्रालय से सम्बद्ध संसदीय परामर्शदात्री समिति की बैठक हुई। बैठक में समिति के दोनों सदनों के सदस्य, गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय, अजय कुमार मिश्रा, निशिथ प्रामाणिक और केन्द्रीय गृह सचिव सहित गृह मंत्रालय, एनसीआरबी और राष्ट्रीय फॉरेन्सिक विज्ञान विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। बैठक में देश में उपलब्ध फोरेंसिक विज्ञान क्षमताओं, विशेष रूप से फोरेंसिक जांच पर आपराधिक न्याय प्रणाली की बढ़ती निर्भरता को ध्यान में रखते हुए, की समीक्षा की गई। केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा को सबसे अधिक महत्व देती है और अपराध का पता लगाने और रोकथाम के लिए प्रणालियों को मजबूत करने और प्रभावी कानून प्रवर्तन के माध्यम से लोक कल्याण के प्रति कटिबद्ध है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में केंद्रीय गृह मंत्रालय 90% तक दोषसिद्धि दर हासिल करने और देश में एक नागरिक अनुकूल और प्रभावी आपराधिक न्याय प्रणाली प्रदान करने के प्रति कटिबद्ध है। अमित शाह ने अपराधियों द्वारा प्रौद्योगिकी के उपयोग के मद्देनज़र जांच ऐजेंसियों को उनसे एक कदम आगे रहने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और कहा कि मोदी सरकार राज्य सरकारों के साथ मिलकर पुलिस जांच, अभियोजन और फोरेंसिक के क्षेत्र में सुधारों के लिए त्रि-आयामी दृष्टिकोण पर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि लक्षित दोषसिद्धि दर हासिल करने के लिए प्रौद्योगिकी आधारित और साक्ष्य आधारित जांच पर ध्यान देने का ये सही समय है। शाह ने उन्नत जांच तकनीकों के उपयोग में कांस्टेबल से लेकर उच्चस्तरीय पुलिसकर्मियों की क्षमता निर्माण पर ज़ोर दिया। उन्होंने भारतीय दंड संहिता, आपराधिक प्रक्रिया संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम में प्रस्तावित व्यापक संशोधन के माध्यम से प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में एक स्वतंत्र अभियोजन निदेशालय और एक स्वतंत्र फोरेंसिक विज्ञान निदेशालय स्थापित किए जाने की बात कही। शाह ने कहा कि मोदी सरकार 6 साल से अधिक कारावास की सजा वाले अपराधों के सभी मामलों में फोरेंसिक जांच को अनिवार्य बनाने की दिशा में भी काम कर रही है। केंद्रीय गृह मंत्री ने समिति के सदस्यों को प्रस्तावित सुधारों को लागू करने के लिए आवश्यक क्षमता निर्माण की दिशा में केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय की स्थापना कानून प्रवर्तन एजेंसियों की जनशक्ति के प्रशिक्षण के लिए की गई है ताकि उन्हें अपराध, विशेष रूप से साइबर अपराध, डार्क-नेट आदि का मुकाबला करने के लिए नई तकनीक के उपयोग में प्रशिक्षण दिया जा सके। इसके अलावा युवाओं की नई तकनीकों में विशेषज्ञता और नवाचार को आकर्षित करने के लिए हैकाथॉन भी आयोजित किए जा रहे हैं। फोरेंसिक क्षेत्र के लिए प्रशिक्षित जनशक्ति प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है और केंद्र सरकार ने राज्यों से प्रत्येक राज्य में कम से कम एक कॉलेज को एनएफएसयू के साथ संबद्ध करने का अनुरोध किया है। श्री शाह ने कहा कि अपराध की रोकथाम के लिए अपराध के पैटर्न की पहचान करने के लिए एक मॉडस ऑपरेंडी ब्यूरो की स्थापना भी की गई है। अमित शाह ने सदस्यों को बताया कि प्रत्येक जिले में मोबाइल फोरेंसिक विज्ञान इकाइयों की स्थापना सहित देश भर में फोरेंसिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए केन्द्र सरकार धनराशि उपलब्ध करा रही है, और ये इकाई एक जिले में कम से कम तीन ब्लॉकों को सेवा देगी। उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले फोरेंसिक परिणामों के लिए देश के सभी एफएसएल में फोरेंसिक उपकरणों, उपकरण अंशांकन (कैलिब्रेशन), मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) को मानकीकृत करने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं।

तीस्ता सेतलवाड और पूर्व आईपीएस आरबी श्रीकुमार के 2 जुलाई तक रिमांड मंजूर

अहमदाबाद। 2002 के गुजरात दंगों को लेकर गुजरात को बदनाम करने के मामले में अहमदाबाद की कोर्ट ने सामाजिक कार्यकर्ता तीस्ता सेतलवाड और पूर्व आईपीएस आरबी श्रीकुमार के पांच दिन के रिमांड मंजूर किए हैं। पुलिस ने सेतलवाज और श्रीकुमार को अदालत में पेश कर 14 दिनों की रिमांड की मांग की थी। हांलाकि कोर्ट ने 2 जुलाई तक दोनों के पुलिस रिमांड मंजूर किए हैं। बता दें कि शनिवार को गुजरात एटीएस ने तीस्ता सेतलवाड को मुंबई के जुहू स्थित उनके निवास से हिरासत में लिया और आज सुबह अहमदाबाद पहुंचने के बाद उन्हें विधिवत गिरफ्तार किया। बीते दिन ही पूर्व आईपीएस आरबी श्रीकुमार को अहमदाबाद क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने तीस्ता सेतलवाड की अहमदाबाद के वीएस अस्पताल में मेडिकल जांच करवाई। जिसके बाद दोपहर तीस्ता सेतलवाड और आरबी श्रीकुमार को मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट के चैम्बर में पेश किया गया। जहां क्राइम ब्रांच ने दोनों आरोपियों के 14 दिनों के रिमांड की मांग की। क्राइम ब्रांच ने न्यायधीश को बताया कि जांच में सेतलवाड और श्रीकुमार सहयोग नहीं कर रहे हैं। तीस्ता ने कोर्ट को बताया कि गुजरात एटीएस बगैर वारंट मेरे घर में घुस आई और मुझसे मेरा मोबाइल छीन लिया। इतना ही नहीं मुझे धक्का मारा और मारपीट भी की। तीस्ता ने आरोप लगाया कि मुझे परेशान करने के लिए गुजरात एटीएस मुंबई से कार में अहमदाबाद लाई है।

बंबल ने भारत में 'स्टैंड फॉर सेफ्टी' अभियान पुनः शुरू किया

वीमैन फर्स्ट सोशल नेटवर्किंग ऐप, बंबल ने पिछले साल अपने पहले संस्करण के सफल लॉन्च के बाद 'स्टैंड फॉर सेफ्टी'के साथ वापसी की है। यह अभियान ऐप द्वारा एक सुरक्षित, दयावान और ज्यादा सम्मानपूर्ण इंटरनेट का निर्माण करने में मदद करने के इसके वैश्विक प्रयास का हिस्सा है।

महिमा कौल, हेड, पब्लिक पॉलिसी एशिया पैसिफिक, बंबल ने कहा, ''हमें अपनी तरह की अलग सेफ्टी हैंडबुक बनाने और समुदायों को ऑनलाईन दुर्व्यवहार, भेदभाव एवं उत्पीड़न को पहचानकर उनसे लड़ने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए सेंटर फॉर सोशल रिसर्च एवं न्याय के साथ साझेदारी करने की खुशी है। बंबल दया, सम्मान, समावेशन एवं समानता, और सुरक्षा के मूल्यों पर आधारित है, जो पहले दिन से ही बंबल के मिशन का मूल रहा है। हमारा 'स्टैंड फॉर सेफ्टी' अभियान ऐसी दुनिया का निर्माण करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करता है, जिसमें सभी रिश्ते स्वस्थ व समान हों।''

भारत में डिजिटल सुरक्षा की बढ़ती समस्या को देखते हुए, इस साल, बंबल भारत में अहिंसक, लैंगिक समानता वाले समाज का निर्माण करने के लिए समर्पित एक गैरलाभकारी संगठन, सेंटर फॉर सोशल रिसर्च (सीएसआर) के साथ साझेदारी में अपनी तरह की अलग सेफ्टी हैंडबुक रिलीज़ कर रहा है, जो डिजिटल सुरक्षा के बारे में जागरुकता बढ़ाएगी और समुदाय को ऑनलाईन नफरत, उत्पीड़न, एवं भेदभाव के खिलाफ लड़ने में समर्थ बनाएगी।

अब सूरत में भी मिलेंगी आईकेयर से जुड़ीं वर्ल्ड क्लास सेवाएं, सेंटर फॉर साइट के नए सेंटर का शुभारंभ

सूरत भूमि, सूरत। वर्ल्ड क्लास सेवाओं के लिए मशहूर सेंटर फॉर साइट ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स ने आईकेयर की दिशा में एक और अहम कदम उठाया है. सीएफएस ने सूरत में भी अब अपना सेंटर शुरू कर दिया है.

इस सेंटर के शुभारंभ के मौके पर गुजरात की राजनीति से जुड़े कई जाने माने चेहरे शामिल रहे. लोकसभा सांसद और गुजरात बीजेपी के अध्यक्ष सीआर पाटिल, गुजरात सरकार में सड़क एवं भवन, ट्रांसपोर्ट, सिविल एविएशन, टूरिज्म और पिलग्रिमेज जैसे अहम मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाल रहे पुर्नेश मोदी हस्तियां मौजूद रहीं.

गुजरात बीजेपी के अध्यक्ष और लोकसभा सांसद सीआर पाटिल ने इस असवर पर कहा, ''सेंटर फॉर साइट का हम सूरत में स्वागत करते हैं और इसकी उपलब्धियां देखकर हम खुश हैं. सेंटर फॉर साइट ने मरीजों को बेहतर टेक्नॉलजी और बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराने के मामले में महत्वपूर्ण प्रगति की है. साथ ही इनके पास एक्सपर्ट टीम भी है. यही वजह है कि सेंटर फॉर साइट एक आदर्श वन स्टॉप आई केयर डेस्टिनेशन बन गया है.''

उद्घाटन समारोह में मौजूद गुजरात सरकार के मंत्री पुर्नेश मोदी ने कहा कि सूरत में इस सेंटर के आने से आंखों की केयर का एक नया युग शुरू होगा. सेंटर फॉर साइट यहां के लोगों को अच्छा और अफॉर्डेबल इलाज मुहैया कराएगा. इस अस्पताल के पास बहुत अच्छी मशीनें हैं और नामी डॉक्टरों की टीम है. मुझे विश्वास है कि सेंटर फॉर साइट के आने से सूरत के लोगों को लाभ मिलेगा.''

राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों के अलावा कार्यक्रम में सेंटर फॉर साइट ग्रुप ऑफ आई हॉस्पिटल्स के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉक्टर महिपाल सिंह सचदेव भी मौजूद रहे. इस मौके पर डॉक्टर महिपाल सचदेव ने कहा, ''भारत में करीब 12 मिलियन लोग अंधकार में जीवन गुजार रहे हैं. दुनिया में ब्लाइंड लोगों की कुल आबादी के एक तिहाई लोग भारत में हैं. आंखों से जुड़ी समस्याओं के इलाज के लिए यूं तो सुपर स्पेशयलिटी सुविधाओं में काफी इजाफा हुआ है, बावजूद इसके अभी ऐसे हालात नहीं हैं कि पूरे भारत में ये सुविधाएं मिल सकें. सेंटर फॉर साइट इस मिशन पर काम कर रहा है कि पूरे देश में कम से कम खर्च पर वर्ल्ड क्लास सेवाएं देकर लोगों का इलाज किया जा सके. हमारा विश्वास है कि हर आंख को बेस्ट इलाज मिलने का हक है.''

गुजरात में कोरोना के नए मामले फिर 400 को पार, 218 लोग ठीक होकर अपने घरों को लौटे

अहमदाबाद ।

गुजरात में आज फिर कोरोना के नए मामले 400 को पार कर गए। शुक्रवार को राज्य में 380 केस दर्ज हुए थे और आज इसकी संख्या बढ़कर 419 पर पहुंच गई। दूसरी ओर 218 लोगों को ठीक होने के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। राज्य में रिकवरी रेट घटकर 98.92 प्रतिशत रह गया है। राहत की बात है कि आज भी कोरोना से कोई मौत नहीं हुई। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के मुताबिक पिछले 24 घंटों में शनिवार को भी सबसे अधिक 166 नए केस अहमदाबाद कॉर्पोरेशन में सामने आए हैं। सूरत कॉर्पोरेशन में 62, वडोदरा कॉर्पोरेशन में 35, भावनगर कॉर्पोरेशन में 30, सूरत में 22, वलसाड में 13, जामनगर कॉर्पोरेशन में 10, नवसारी में 9, अमरेली में 8, गांधीनगर कॉर्पोरेशन में 7, राजकोट कॉर्पोरेशन में 7, गांधीनगर में 5, मेहसाणा में 5, पाटन में 5, राजकोट में 5, अहमदाबाद 4, कच्छ में 4, भावनगर में 3, देवभूमि द्वारका में 3, खेडा में 3, सुरेन्द्रनगर में 3, वडोदरा में 3, मोरबी में 2, साबरकांठा में 2, आणंद में 1, भरुच में 1, तापी में 1 समेत राज्यभर में कोरोना के कुल 419 नए मरीज सामने आए हैं। जबकि 219 लोग ठीक होकर अपने घर लौट गए। राज्य में अब तक कुल 1216463 लोग कोरोना से ठीक हो चुके हैं। जबकि 10946 मरीजों की कोरोना से मौत हो चुकी है। फिलहाल राज्य में कोरोना के 2299 मामलों में 229। स्टेबल हैं और 2 मरीज वेन्टीलेटर पर हैं। दूसरी ओर राज्य में चल रहे टीकाकरण अभियान के तहत कोरोना के 43049 टीके लगाए गए।

रैयोली में 16.50 करोड़ के खर्च से बने देश के पहले और विश्व के तीसरे फॉसिल पार्क-डायनासोर म्यूज़ियम

महीसागर ।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात में पर्यटन उद्योग तथा पर्यटन गतिविधियों को गति मिली है। गुजरात आज विश्व के मानचित्र में महत्व के पर्यटन केंद्र के रूप में उभरा है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल रविवार को महीसागर ज़िले के रैयोली में गुजरात राज्य पर्यटन निगम द्वारा 16.50 करोड़ रुपए की लागत से तैयार हुए देश के प्रथम तथा विश्व के तृतीय फॉसिल पार्क, डायनासोर म्यूज़ियम फेज़-2 के विकास कार्यों वित्त मंत्री कनु देसाई, ग्रामीण विकास मंत्री अर्जुनसिंह चौहाण, स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्रीमती निमीषान सुथार की उपस्थिति में लोकार्पण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री तथा अन्य महानुभावनों ने डायनासोर म्यूज़ियम की मुलाकात लेकर 5-डी थियेटर, डिजिटल फॉरेस्ट, 360 डिग्री वर्चुअल रियलिटी, एक्सपेरिमेंट लैब, सेमी सर्कुलेशन प्रोजेक्शन, मूडलाइट, 3-डी प्रोजेक्शन मैपिंग तथा होलोग्राम जैसी सुविधओं का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि रैयोली के डायनासोर संग्रहालय से गुजरात ने पर्यटन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है। रैयोली में निर्मित इस डायनासोर म्यूज़ियम द्वारा गुजरात की धरती के गौरव की एक और झलक अब विश्व देखेगा।

इस संदर्भ में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रदेश के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर विश्वस्तरीय थीम पर आधारित मेलों का आयोजन कर पर्यटन स्थलों को उजागर कर प्रदेश के टूरिज़्म को जीवंत बनाया है। उन्होंने आगे कहा कि गुजरात में पर्यटन क्षेत्र के विकास से रोज़गार के असवर पैदा हुए हैं और राज्य में पर्यटन का दायरा बढ़ाने के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयास कर रही है। नतीजतन, राज्य में पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज गुजरात में धार्मिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, खेल पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, सीमा पर्यटन, वन्यजीव पर्यटन, समुद्र तट पर्यटन जैसे विभिन्न पर्यटन क्षेत्रों का विकास हुआ है। रैयोली में डायनासोर संग्रहालय से गुजरात ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। गुजरात की भूमि के गौरव की एक और झलक दुनिया को देखने को मिलने वाली है। गुजरात एक प्राचीन भूमि है और इसकी जड़ें प्रागैतिहासिक काल तक जाती हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि रैयोली गाँव की ज़मीन गुजरात के प्रागैतिहासिक काल का प्रमाण है और हमने इस इतिहास को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है। आज भारत के प्रागैतिहासिक युग को पुनर्जीवित करने का अवसर है।

उन्होंने कहा कि स्टीवन स्पीलबर्ग ने 'जुरासिक म्यूज़ियम' नामक एक विश्व प्रसिद्ध फिल्म बनाई था । 1993 में रिलीज हुई इस फिल्म ने बच्चों, बूढ़ों सहित सभी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। लोगों ने पहली बार विशालकाय छिपकली जैसे डायनासोर सिनेमा के पर्दे पर देखकर डायनासोर युग के अनोखे रोमांच का अनुभव किया था। उन्होंने कहा कि हमने अब तक जो रोमांच का अनुभव फिल्मों और टेलीविजन के पर्दे पर किया था, वही रोमांच अब पर्यटन प्रेमियों को गुजरात में इस संग्रहालय में डायनासोर स्टैच्यू, रोचक जानकारियों और डायनासोर से जुड़ी चौंकाने वाली प्रदर्शनियों के जरिए देखने को मिलेगा।

पटेल ने कहा कि अभी तक डायनासोर के बारे में केवल कल्पनाएं ही की गई है, कैसे विशालकाय दिखते होंगे, क्या खाते होंगे, कैसे जीवित रहते होंगे, इन सभी कल्पनाओं का जवाब यहाँ के संग्रहालय में जाकर मिलेगा। दुनिया का तीसरा डायनासोर संग्रहालय दुनिया भर के कई पर्यटकों, पुरातत्वविदों और विशेषज्ञों के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा। संग्रहालय के संचालन से जुड़े सभी लोगों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि इस डायनासोर संग्रहालय रैयोली तथा बालासिनोर तहसील का विश्व पर्यटन मानचित्र पर नाम चमकेगा, जिसके परिणामस्वरूप गुजरात का पर्यटन क्षेत्र मज़बूत होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रधानमंत्री की प्रेरणा से पर्यटन सर्किट विकसित कर पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने का दृष्टिकोण अपनाया है।

लाईफस्टाईल ने सीज़न की सबसे प्रतीक्षित सेल की घोषणा की

सूरत ।

लेटेस्ट ट्रेंड्स के लिए भारत के अग्रणी फैशन डेस्टिनेशन, लाईफस्टाईल ने अपनी बहुत प्रतीक्षित 'सेल' की घोषणा की, जो अब लाईव चल रही है। लाईफस्टाईल सेल में शॉपिंग करने वाले ग्राहकों को 50 प्रतिशत तक की छूट के साथ शीर्ष फैशन ब्रांड्स के लेटेस्ट स्टाईल्स पर कई आकर्षक डील्स मिलेंगी।

फैशन शॉपर्स को अपनी वारड्रोब के लिए बेहतरीन स्टाईल खरीदने को मिलेंगे क्योंकि लाईफस्टाईल महिला, पुरुष और बच्चों की श्रेणियों में सबसे आकर्षक डिस्काउंट प्रदान कर रहा है। ग्राहकों को फोर्सा, जिंजर, मेलॉंज़, कैप्पा, कोड, फेम फॉरएवर आदि ब्रांड्स का लाईफस्टाईल के लिए अद्वितीय पोर्टफोलियो और अनेक अग्रणी ब्रांड्स जैसे वेरो मोडा, लेविस, प्यूमा, लॉरिआल, टाईटन, बीबा, ओनली, लुई फिलिप, टॉमी हिलफिगर, वॉन हॉज़न, यूनाईटेड कलर्स ऑफ बेनेटन जैसे ब्रांड्स के बेहतरीन स्टाईल मिलेंगे।

अपरेल, ब्यूटी, वॉच, फ्रैग्रेंस, फुटवियर, हैंडबैग्स, और एक्सेसरीज़ में लेटेस्ट ट्रेंड्स के साथ आपको बहुत आकर्षक मूल्य एवं शानदार ऑफर्स का लाभ भी मिलेगा।

एसबीआई क्रेडिट कार्ड धारकों को विशेष ऑफर के तहत कम से कम 7000 रु. की शॉपिंग करने पर 10 प्रतिशत का अतिरिक्त कैशबैक मिलेगा। यह ऑफर केवल ऑफलाईन स्टोर्स पर लागू है। नियम व शर्तें लागू।

लाईफस्टाईल सेल सभी लाईफस्टाईल स्टोर्स, ऑनलाईन सपमिजलसमेजवतमेण्बवउ पर और एन्ड्रॉयड एवं आईफोन यूज़र्स के लिए लाईफस्टाईल ऐप पर उपलब्ध होगी। सूरत में लाईफस्टाईल स्टोर राहुल राज मॉल, दूमस रोड, पिपलोन में स्थित हैं।

तेज हवा और गरज के साथ अहमदाबाद में मूशलाधार बारिश, राज्यभर में बरसाती माहौल

अहमदाबाद। रविवार को अहमदाबाद में शाम ढलते ही तेज हवा और गरज के साथ मूशलाधार बारिश ने चहुंओर पानी पानी कर दिया। तेज हवा के बीच शहर में कई जगह बिजली के पोल और पेड गिर गए। अहमदाबाद के अलावा राज्य के कई जिलों में बरसाती माहौल बना हुआ है। कई जगह मूशलाधार बारिश हो रही है। गर्मी और उमस से परेशान अहमदाबाद के लोगों को रविवार शाम बड़ी राहत मिली। शाम ढलते ही अहमदाबाद के बोपल, मेमनगर, आश्रम रोड, नारणपुरा, एसजी हाईवे, थलतेज, नेहरूनगर, सेटेलाइट, वस्त्रापुर, वेजलपुर, प्रहलादनगर, घाटलोडिया, पालडी, एलिसब्रिज, सरखेज, सनाथल, शांतिपुरा, बाकरोल विसलपुर समेत कई इलाकों में तेज हवा और गरज के साथ झमाझम बारिश हुई। पिछले दो-तीन दिन से अहमदाबाद में गर्मी का प्रमाण लगातार बढ़ रहा था। लंबी प्रतीक्षा के बाद रविवार को मेघा मेहरबान हुए लोगों को गर्मी और उमस से राहत दी। तेज हवा के चलते बोपल, घुमा, सरखेज, सनाथल, बाकरोल इत्यादि में बिजली गुल हो गई। हांलाकि हरकत में आई बिजली कंपनी ने आधे घंटे में बिजली आपूर्ति बहाल कर दी। जानकारी के मुताबिक पश्चिमी अहमदाबाद में सबसे अधिक डेढ़ ईंच बारिश हुई है। पश्चिमी अहमदाबाद के जोधपुर, सेटेलाइट, बोपल, घूमा, इस्कॉन, आश्रम रोड, वाडज, उस्मानपुरा, सरखेज, पालडी, एलिसब्रिज इत्यादि क्षेत्रों में सबसे अधिक बारिश हुई है। जबकि पूर्वी अहमदाबाद के विराटनगर, ओढव, निकोल, नरोडा और रामोल इत्यादि में आधा ईंच बारिश हुई। वहीं अहमदाबाद के मणीनगर, मेम्को, नारोल और वटवा इत्यादि में छुटपुट बारिश की खबर है। मूशलाधार बारिश के बीच तेज हवा चलने से शहर में करीब 15 जितने पेढ़ धराशायी हो गए हैं। तेज हवा के साथ बारिश होने से कई जगह ट्रैफिक जाम हो गया। कहीं जलजमाव होने से लोगों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। अहमदाबाद के अलावा राज्य के कई जिलों में भी मूशलाधार बारिश जारी होने की खबर है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)